

Code no 418
SL 45

MSS / 2 the Press

দেশবন্ধু চিত্রঞ্জন

892



মনিযাদচি
মনিযাদচি

ছোটদের
বইয়ের
স্বপ্নবাজ্য



শৈবা প্রকাশন বিভাগের নতুন ঠিকানা
৮৬/১, মহারাজা গাঁও রোড, কলকাতা-৯

Acc No - 15044

চাহুড়া : ২.

- ৭.৪

৮৭২

মাসিয়া-মাসিয়া-১১

দেশবন্ধু

• বিজ্ঞান

অনি প্রক্ষিপ্ত

ইমেরা পুস্তকালয়
৭/১ বি মালমতা নথি
প্রতিষ্ঠান

৮৪

आपने दातड़े छायाएँ आरु आपने आओके
प्रभावशाली हृष्टले रहो चिकित्सा उत्तम
गवर्नर के नाम देखके उत्तम कल्पित गवा
कर्मसु विषेश इतिहास व भाषणिक उद्देश्य
प्रभावद आगमनम् नहे, बता मेरे शृष्टि जागिरानी
अश्वमहाता गवा उत्तरव उत्तम उत्तरव उत्तरव
उत्तरव गवा नामे रखिगाठा

— रवीन्द्रनाथ

देशप्रधान उक्ता विश्वराजूंठि देशवस्तु चिकित्सा।

जिरि गवाहामी इत्येतिथम् कृष्ण देशप्रधान रसा प्रवृत्तीन्
देशवस्तु राजा ऊरु लालशाह, देशवस्तु श्रावीनवाह राजा ऊरु वासु आद्याम-प्रधान
क्षमत्वर स्वार्थे तिनि देशप्रधान श्रद्धा लगवाह आसन लाभे रथचित्तम्।
देशवस्तु प्रवृत्तीनवाह क्षम ऊरु गृह्यवाह प्रधान रसा इत्येतिथम्। ऊरु
ऊरु इत्येतिथम् गवाहामी गवाहामी गवाहामी गवाहामी गवाहामी गवाहामी
ऊरु ऊरु देशवस्तु श्रावीनवाहे इत्येतिथम् गवाहामी गवाहामी गवाहामी
गवाहामी गवाहामी गवाहामी गवाहामी गवाहामी गवाहामी गवाहामी गवाहामी।

गवाहामी गवाहामी गवाहामी गवाहामी गवाहामी गवाहामी गवाहामी गवाहामी
गवाहामी गवाहामी गवाहामी गवाहामी गवाहामी गवाहामी गवाहामी गवाहामी गवाहामी।

प्रधान गवाहामी

" (प्र०)

८३, रहो शहू प्राणि कि इह?

- अह जो ईना लेन, उक्ति जागि रहन, मृत्युनिर्भाव
इह?

जापन शहो उक्ति जो मर इच्छाकृत इह।

- लशन जगद रक्षा बोल, व्याधि, अमावस्या एवं इच्छाकृत?

- अमावस्या कि इच्छा करना, उक्ति जागेतह एवं अपार
जरूर रह इच्छाकृत हीरे ठार्हि हो।

- औ अमावस्या रोटा, चिटा।

अमावस्या कियात नाम परिवार इच्छाकृत नाम
मरने छंड तथा अरेताह इच्छा अवश्यक उठिग। अरेताहि नाम
कियाका नाम। यिनि उक्ति रह अमावस्या इच्छाकृत एवं रह इच्छाकृत,
उक्तिना मर इच्छाकृत इह, उक्ति गमन एवं वरवर्णि इत्युक्ति अरकृत अरकृत
आदेतीरि इमावस्या श्रीकृष्ण इच्छाकृत। यिनि उक्ति लेखकृत रहन भाव
माले दृष्टि इच्छाकृत।

॥ अन्तः ॥

उक्ति - अलीमद, इच्छाकृत उक्ति अरकृत नाम।

उक्ति इतह रह इतह उक्ति रह इतह।

मिल्करावद्देश लेलिरवाई असता। एक मिनिट (मुख्य स्थानिवासी
मध्ये) गोप्यात्मक व्यक्तिहून (गोप्यात्मक गोप्यी आणि व्यक्तिहून) भर्ते विषयाप्रद
प्रवृत्ती लेलिरवाई असता नामाज्ञविवाद व्याप्ति उ घटावित्तु आणि घटावित्तु व्यक्तिहून
प्रवृत्ती आणि उ घटावित्तु नसा, ब्रह्माचारिणी, धर्माचारिणी उ दानसीपणाऱ्या
लेलिरवाई देखावा उच्चाप्रवाद आणि घटावित्तु व्यक्तिहून इत्याता असतीचुकी प्राप्ती,
आत तु फ्रांसेस या विषयावाच-ज्ञान नव्हिनी ठेवावरे क्षमा।

लेलिरवाई तु दान-पाविवाई तर उर्किन-व्यावितोड-
लेलिरवाई। गोप्यी लेलिरवाई डार्टी घटावित्तु व्यक्तिहून आप्यावित्तु
कठे इत्या न घेवता पट्टवित्तु व्यक्तिहून इत्या असा। कलीमाचार, इर्डाचाराय उ कुक्क-
म्बाचार-विवाद व्यक्तिहून इत्यावा तु व्यक्तिहून इत्या व्यक्तिहून इत्यावा
कलीमाचार इत्यावा तु व्यक्तिहून इत्यावा व्यक्तिहून। योव्यालेले विवादे दुसऱ्यांमध्ये
प्रवृत्ती व्यक्तिहून। गोप्याचार व्यक्तिहून व्यक्तिहून उक्ताती आवश्यक आवश्यक आवश्यक
प्रवृत्ती व्यक्तिहून इत्यावा व्यक्तिहून व्यक्तिहून।

ता व्यक्ति घुर्जाचार व्यक्तिहून व्यक्तिहून उक्ताती व्यक्तिहून
आवश्यक व्यक्तिहून (१८७० माला) : उक्ताती व्यक्तिहून व्यक्तिहून
चित्तव्यावर व्यक्तिहून व्यक्तिहून व्यक्तिहून व्यक्तिहून व्यक्तिहून व्यक्तिहून व्यक्तिहून
व्यक्तिहून। तसे व्यक्तिहून व्यक्तिहून व्यक्तिहून व्यक्तिहून व्यक्तिहून व्यक्तिहून व्यक्तिहून
व्यक्तिहून व्यक्तिहून व्यक्तिहून व्यक्तिहून व्यक्तिहून व्यक्तिहून व्यक्तिहून व्यक्तिहून
व्यक्तिहून व्यक्तिहून व्यक्तिहून व्यक्तिहून व्यक्तिहून व्यक्तिहून व्यक्तिहून व्यक्तिहून

१८७० माला व्यक्तिहून व्यक्तिहून व्यक्तिहून व्यक्तिहून व्यक्तिहून। लिंग व्यक्तिहून
व्यक्तिहून व्यक्तिहून।

अनुदानम् । श्री विष्णु देवता का दूर दूर अद्वितीय विजय, विश्वकोश
परं विजयम् ॥

ਅੰਦਰ ਰਤਾ ਲਾਗੇ ਰਾਹਾਰੇ ਕਲੀਤਾਈ ਇਕੱਥੇ ਸੂਰ ਭੈਂਬੀ ਪ੍ਰਧਾਨ
ਲੁਚਿ। ਰਾਈਵਾਂਕੋਂ ਉਦਿਦ ਇਸ਼ਾਰੇ ਛੱਡ ਸੂਰ ਆਕਿਏ ਹੋਏ। ਰੁਹਨਵੇਂ ਭੀ
ਅਮਰ ਗੁਰੂ ਪਾਇਆਈ ਪ੍ਰਕਾਰ ਆਗਾਮੀ ਮਾਝ ਗੁਰੂ ਘਰੇ ਪ੍ਰਤਿਆਨ ਕੁਝ ਇਤਨ
ਵਿਹਾੜਾਣ ਸ਼ੁਰੂ ਕੀਤਾ। ਕਾਨੂੰਮਾਤਰ ਪ੍ਰਕਾਰ ਹੌਲਿਤਾ। ਕਾਨੂੰਮਾਤਰ ਸੂਰ ਮੈਂਬੀ ਲਾਕ
ਇਤਨ। ਪਾਂਤ ਲਿੰਗ ਨਿਕੂਤ ਐਟਰਨਿਕਿਵੇ ਰਤਾਂਗ ਸੁਹਿਰਾ, ਲੁਕ ਵਿਹਾੜਾਣ
ਕੁਝ ਕੋਈ ਇਤੇ ਇਤੇ ਪ੍ਰਕਾਰ, ਕਲੀਤਾਈ ਕਾਨੂੰ, ਅਗਲੇ ਐਟਰਨਿਕਿਵੇ ਇਤੇ ਇਤੇ।
ਲੁਚਿਤਾਈ ਅਤੇ ਰੁਹਨਵੇਂ ਸਾਡੇ। ਕਲੀਤਾਈ ਦੱਤਾ ਲਾਲਾ, ਚਿਕ੍ਕੇ ਪ੍ਰਕਾਰ
ਧੀਰੇ ਸੂਰ ਜਾਂਚੀ ਰਿਕਾਰ ਜਾਂਚੇ ਗਏ ਹੈਂਦੇ ਹਨ ਕਿਵੇਂ ਕਿਵੇਂ, ਐਟਰਨਿਕਿਵੇ ਨਿਕ੍ਕ ਨਾਲੋਂ
ਅਗਲੇ ਸੂਰ ਮੁਕਿ ਲਾਗਿਆ, ਜਾਂਚੇ ਲਈ ਹਕਕੇ।

ଯେତ ଖଲିଆହାରକେ ମେଘଦୂଷ୍ମ ପରିବହନ କିମ୍ବା

प्रामाणेय प्राप्तिविलिपि भवेत् अत आम चर्तवाहिनी। कामसंतुष्टिः तु उल्लिखिता उपाधिः हिते तदैः ग्रन्थाद्याद् आप्तवाक्यी प्रारब्धतः विद्युत्त अपाद्य हृष्टः तु तेऽपि। देवार्थित्वाद्युपाधि प्राप्तिविलिपि भवेत् अत आम चर्तवाहिनी। आपाद्य सुविद्यात् प्राप्तवाहिनी शुद्ध तेऽपि चर्तवाहिनी। दिनु चर्तवाहिनी हृष्टः, दाम-
नविवाहक समाचारीत्वादि उ देवार्थित्वाद्युपाधि अपर्युप तथा विद्युत्त आपाद्य दृष्ट्वाद्यते
प्राप्तवाहिनी हिते चर्तवाहिनी। विवाहे ग्रन्थे आपाद्य वित्तवाहिनी विलिप्तवाहिनी
चर्तवाहिनी। देवार्थित्वाद्युपाधि ग्रन्थाद्याद् आपाद्य वित्तवाहिनी।

ଅର୍ଥାତ୍ କଥା ଗିଲେଛି। ନିଶ୍ଚିହ୍ନର ପରିମା ଅଧିକ ଦେଖି କାହାର ଅନୁଭବ ଫୁଲାହାର
ଅନୁଭବ ପ୍ରକଟିତ କରି ଦୂଆଛି। କିନ୍ତୁ ଦେଖି କୌଣସି ଡୋର ପାଇଁ କାହାରିର ଧ୍ୟା
ନାସ ନି। ଧନନ୍ଦୀମନ ଫୁଲାହାର ଭରତମନ ଆଶ୍ରମୀଯ-ଧରନ ପରିବୃତ୍ତ ହେଲା ବାବତ୍ରେ—
ଦୁଇକାହାର ଅଭିଭବ କେବ ପୋଷିବାକୁ କିମ୍ବା ଭାବେ ଘରମାତ୍ର ଅଭିଭବିତ
ହେଲାର ଗୁରୁତବର କିମ୍ବା ପ୍ରତିବନ୍ଦିତ ହେଲାର କାହାରିତି। ଏହା ଉ ପାଦବୀମଧ୍ୟରେ ଆବୁଦୀର୍ଘ
ଶ୍ରୀମନ୍ ଶୁଭରାତ୍ର ପରିମା ତାହାର କାହାରିତି। ଲୋକଙ୍କ କିମ୍ବା କାହାରିର
ଦିନେ, କିନ୍ତୁ ଉକ୍ତର ପରିମା କାହାରିର କରି କାହାରିତି। କୈ ଉତ୍ସବରେ ତାହାର
କାହାରିତି। ଏହାର କାହାରିର କାହାରିର କାହାରିର କାହାରିର କାହାରିର
କାହାରିର କାହାରିର କାହାରିର ।

अद्वितीय देवा अनुभव अनुभव करने वाले हैं। यह शब्द इसका अर्थ है कि उन्होंने अपने जीवन में एक ऐसी घटना देखी है, जिसके बाद उन्होंने अपने जीवन का अधिकांश अनुभव करने की विश्वासीता नहीं रखता। यह शब्द अपने जीवन का अधिकांश अनुभव करने की विश्वासीता को दर्शाता है। यह शब्द अपने जीवन का अधिकांश अनुभव करने की विश्वासीता को दर्शाता है।

गुरुर चित्तलभेदं आस्यत् यजा वन्मि। ऊर्वीवद्व निशादीक्षीय
प्राप्त वल्लोऽप्य हृतम्। दार्ढं प्रविकादे तिर्ति द्वितीय ग्रन्थं अद्भुतं इही। ऊर्व ग्रन्थे
नवीनी उत्तमं युगं गणते लोचा गत्वा। प्रसादेव प्रवद्वद्व किंतु भवत्त एवा
लोभज्ञः। अधीरं ग्रन्थं तिरित लग्नशीला द्वितीय। ऊर्व वद्वद्व एव आश्रीय-प्रदद्व
प्रती शीघ्रावक्तु द्वितीया, आठ॑ उवाचाग्रलेखं धूषितं तद्वित निरुपमावृत्तिः। एवी
प्रकाशवर्णी तिर्ति लाभिवद्व इहीमि। इवाहु नवमं ग्रन्थं ऊर्व हृतम्। दुर्गामोउल्लङ्घी
वेक्षायग्नीदरीव गृह्णाव गत्वे ऊर्व द्वैलम्बित्येवा निशादीक्षीयदगैव रसादे निवद्वद्व
वद्वात् माटृ-ग्रन्थं ग्रन्थं अद्भुतं लाभत्वमि।

ଆଖାଲେବ ଅଟ୍ଟା ଉଦ୍‌ଦେଶ୍ୟ ହିଁ ବିଜ୍ଞାନିକୀ ଲାଗିର ହାତ୍ୟ । ଏହି ଅକ୍ଷେତ୍ର
ମନୋପ୍ରେସ୍ ଲେଖଣିକୁ ଡାକ୍ ଫୋନ୍ ପତ୍ରର ଚିତ୍ରଙ୍କର । ଶ୍ରୀ ପାତ୍ରର ଲିଖିତଙ୍କ
ପରିବହିତ ଲିଖିତ କ୍ଷିତିର ଉତ୍ସବ, ଓ ତଥା ଜାତୀୟ ମାନ୍ୟକ ଲିଖିତ ପରିବହିତ
ଲିଖିତଙ୍କ ଏହି ନିତ ଲେଖଣିକୁ । ଅତ୍ୟାବରିତ ବିଜ୍ଞାନବ୍ୟକ୍ତିର ହିଁ ଶୁଣୁଥିଲା । ଧୀର-
ଶ୍ରୀ-ପରିବହିତ ଉତ୍ସବ ଠାର ବୀରର ମାର୍ଯ୍ୟଦା ହଜାରିଲା । ଧୀର ପଥର ଲାଗିଲେ ଆହୁମତେ
ଲାଗିଲେ ପିଛେ ଶରୀର ହତ୍ୟା, କିମ୍ବା ବିଜ୍ଞାନିକୀ ଲାଗି ତା ଦାର୍ଶିକୁରେବେଳ ଘରିବ ଦିନ୍ତା
ଦୁଃଖାବାଦର ଦୁଃଖାବାଦ କର ନାହିଁ ଯତ୍କାହା ପଦାର୍ଥରେ ବିଭିନ୍ନ
ବ୍ୟାହିଲୁ । ପ୍ରସର ପାଇଁଥିବ କୁଟି ଚିତ୍ରଙ୍କର ଯେ କାହିଁର କିମ୍ବା ତ ପ୍ରସର ପାଇଁଥିବ
ପାଇଁଥିବ, ତେ ଠାର କାହିଁର ପୂର୍ବ ପରିବହିତ କ୍ଷିତି ।

॥४२॥

गणेश, ते न देवता। मनिकारः ।

ज्ञे दिनिति पाठेऽप्युक्तं ब्रह्मसूत्रं कर्तव्यं चित्तव्यम् । चित्तव्यात्
लिङ्ग छिद्यम् चित्तव्यम् प्रयत्नम् उपर्युक्तं एव भवत्वा ज्ञानम् ।
तिन जाते, अंचटवन् । चित्तव्यम् चित्तव्यम् ब्रह्मसूत्रं तिन रूप, उपर्युक्तं गत्वा-
पाठेऽप्युक्तं ब्रह्मसूत्रं तिन रूप रात्रिकृतं शरीर वसनाम् आद्य
कर्तव्यम् । अथात तिन रूप रात्रि देवयज्ञात् गत्वा इति व्यवहारा । ते देवविद्वान् ब्रह्म-
सूत्रात् विविधात् वास्ते प्रयत्नम् ब्रह्मसूत्रात् व्यवहारा । दाय-मनिकारात् विविधात्
व्यवहारा । अतो व्यवहारात् वास्ते वास्ते वास्ते ।

चित्तव्यात् लोकानाम् अस्ति यस्य लक्ष्यं विश्वामिति श्रुत्वा । शुभो
तादेव वाचित् वाचित् इति । तोऽस्ति विश्वामिति श्रुत्वा । तोऽस्ति वाचित्
अस्ति वाचित् विश्वामिति श्रुत्वा इति । अस्ति शुभं विश्वामिति श्रुत्वा ।
लोकानाम् विश्वामिति श्रुत्वा इति । अस्ति वाचित् विश्वामिति श्रुत्वा ।
शुभं विश्वामिति श्रुत्वा वाचित् विश्वामिति श्रुत्वा इति । अस्ति वाचित् विश्वामिति
श्रुत्वा वाचित् विश्वामिति श्रुत्वा । अस्ति वाचित् विश्वामिति श्रुत्वा ।
वाचित् विश्वामिति श्रुत्वा । अस्ति वाचित् विश्वामिति श्रुत्वा । अस्ति वाचित् विश्वामिति
श्रुत्वा । अस्ति वाचित् विश्वामिति श्रुत्वा । अस्ति वाचित् विश्वामिति श्रुत्वा ।

८ दृष्टिगत

शुभं विश्वामिति श्रुत्वा वाचित् विश्वामिति श्रुत्वा ।
वाचित् विश्वामिति श्रुत्वा । अस्ति वाचित् विश्वामिति श्रुत्वा । अस्ति वाचित् विश्वामिति
श्रुत्वा । अस्ति वाचित् विश्वामिति श्रुत्वा । अस्ति वाचित् विश्वामिति श्रुत्वा ।

प्रभु द्वारे लगात अमर बशुलह भवे बलदानिग्र इति लिखि जाए
आकाशम उम्हित भए व ब्रीमहा बहू दिक्षाप्रदेव दिल्ला। एवं इन
जैव प्रकृति। याति याके शुद्ध चित्तवत्तर कर्म दिव्यं प्राप्त, यिन्हे
लिखि ता दिल्ला योग्यता योग्यता, अमर बशुलह दिल्ला। शुद्ध अतक दिव
किरण्यम् प, आति वाले कि दिव्यं देव्यं इत्यहृ जग दोषे विन्द
बशुलह शुद्ध शुद्ध दिव्यं दोषाद्य प्रदेव रथ अवलिके दिव्यं दर्शे।
उत्तरवाह यिनि दानवर्कर भवते दिव्यं इत्यहृ, देवतवाहे व
साधा वैर लभि तो विनाशि।

ॐ शूर-रीवत् ॥ शूरेणो दिव्यं ॥ नाभु विष्णवि शूरेण
विश्वाम वृष्टि देव। अत लिखि यह शूरेण नीक भावो, अम दूर
शूलाद् और शूर-प्राणीक दिव्यं प। शूर-शूर लिखि यत विविधा शूर
शूराद् अम और अवगार भवे किं शूराद् दिल्ला। शूलाद् ग्राहीते
लिखि अतक शूराद् देव गत देव शूराद् लिखि अवित्य दिव्यादिव्य। ५३-
रीवत् चित्तवक्त्र मे दूर दौर्वले व्यवहारे ज एव, विविध विष्णवात
शूराद्। शूराद् लिखि शूराद् दिल्ला शूराद् अवित्य शूरादि विष्णवात
शूराद्।

मताम् और व्यहारे दिल्ला विष्णवात्। दिल्ला विष्णवात्, शूराद् योनि सेव
विष्णवात् दग्ध अवित्य अवहर। विष्णवात् दिल्ला चित्तवक्त्र दिल्ला दग्ध विष्णव
शूराद्। विष्णवात् व्यवहारे दग्ध दग्ध देव, विष्णवात् विष्णवात्

ଲଗ୍ନ ଅତର ଆଦୃତି କ୍ଷମତା ; ଫଳାଦ୍ୱାରା ଦେଇଥାଏ ପରିଣାମ ଆଦୃତି
କ୍ଷମତା । ଦେଇଥାଏ ମନ୍ଦୁମର୍ଦ୍ଦୀତି ଶ୍ରିହୃଦୟ ଓ ପିତ୍ର ମୂର୍ତ୍ତି । ଦେଇଥାଏ ଅଭି-
ପରମୀତି କରିବାଟି ଓ ସମ୍ବନ୍ଧ ଶ୍ରୀମଦ୍ ; ମାତ୍ରାଦର୍ଶ ଅତର କରିବାଟି ଲିଖି ପୁଣ୍ୟ
ପରମ ପାଦକାଳ । ମାତ୍ରାଦର୍ଶ ଲିଖି ଶଶି ପୋତ ବାବେ ଆଦୃତି କ୍ଷମତା :

ଶ୍ରୀନାଥ ଶିଳାମ୍ବଳେ ଗୁଣିତ ହୁଏ ଦେ

ଏହି ଗୋଟିଏ କାନ୍ତି

दायरे शृङ्खल वल के परिवेश पर्याप्त है

२५ सरित्र भाषा

ब्रह्म उत्तर प्रश्नावेश सुन्दर रथ में था। तदोनि कृत अवृत्त भवाये हैं तिनी हस्तियाँ
यहाँ उत्तर अवृत्त अविचिक हस्तियाँ। देखते हुए वे अद्वा जिन्हें चिलों बढ़ाये-
मिला था अद्वा वे चिद-चित्रक अपापि विद्यालय। ग्रन्थ अवृत्त लिपि-
अप्य आव विक्षय यत ना पावनी अवृत्त व्यवहृत्याँ, अडकाय अवृत्त
देखि अपुरां देखते हैं सरित्। उत्तरकाल चित्रकाव वा ग्रन्थ अप्य उ-
पस्थितिक देखते हैं वे अवृत्त जिन्हें उत्तर कृतनी बताए हस्तियाँ।

४८८६ आले प्रदर्शिया परीक्षा पास कर, चिकित्सा स्पष्टिकनि
यमान उत्तीर्ण कर दिल अद्वितीय एवं अतिरिक्त - महान् विजेता बड़े अद्वितीय
दृष्टिकोण से अपने पड़ोसी शिल्प भवन छिपा कर अपने अद्वितीय
प्रदर्शन करता। अद्वितीय विषय, अद्वितीय उत्तमानुसूचि अद्वितीय अद्वितीय
भवित्वीय उत्तर अद्वितीय उत्तर अद्वितीय अद्वितीय अद्वितीय

v

v

v

v

मुख्य अनीवा आरे व्हाक्षणी भवि, प्रयुक्तेव तथा द्विं जंड अद्वितीय। जिन
यथार परे व्हस्त्र लग्ने आत्म उच्च ग्रन्थावाह अर्थात् द्वितीय उद्देश्य प्रिया
साथ - कैरो उप्रीपाणि। एदृश वाह प्रकाशिततः व्यवहै। लृप्रितिप्रिय व्यवह
विवरण सरभूज चित् तद् व्यवहित। १८५० अगस्त जिन ग्रन्थ अल्पे वि. श. पाप
कला।

ବି.ପ୍ର. ମାତ୍ର ୨୦୯୫ ଅନ୍ତର୍ଜାତିକ ପାଇଁ ଚିତ୍ରଲକ୍ଷ୍ୟ ସମ୍ବନ୍ଧରେ
ମିଶନ୍ ମାର୍ଗିକିମ ଆବଶ୍ୟକ ହିଁଟ ଏବଂ ପ୍ରକାଶ ପୂର୍ବ କରୁଥିଲା ଏହି ଚିତ୍ରଲକ୍ଷ୍ୟ ପ୍ରେସରିଶ୍ନେ ଦେଇଛନ୍ତି ।

2

यावत् शुद्धकर्त्तव्य आदेत्येऽपि भारतेत्यग्रोक्तविशुद्धिभित्तिः किं तर्वा
नामेष्वादेष्वूर्जन्मभारतेऽप्युपाद्यते तिन्दुः किं तर्वा यज्ञविशुद्धिभित्तिः तद्वा
ग्रहविशुद्धिभित्तिः तद्वा तिन्दुः प्रकृत्यादित्यम् ; उपाद्यते तिन्दुः कुरुकर्त्तव्यं शुद्धिभित्तिः
परम्परा एष अभावः क्रियते लाभं कर्त्तव्यं विशुद्धिभित्तिः किं तर्वा । इत्येष्वादेष्वूर्जन्मभारते
शुद्धिभित्तिः भारिभित्तिः अविशुद्धिभित्तिः देवतावद्यते किं तर्वा भारिभित्तिः विशुद्धिभित्तिः ।

किंतु योगदान तेजि शिव अग्नि दया। अधिकिरण इडे दिव
किंतु किंतु शिव उपरिके रहन्। अति शिव ग्राहित परीक्षा दिवसिता
किंतु कृष्णर्थ रहन् परामर्शी। देवते परामर्श उपरामर्शी। एवं उपराम-
र्शी द्वितीय अपार्क शिव उपरिके। लक्ष्मि लक्ष्मी द्वितीय उपराम-
र्शी द्वितीय अपार्क शिव उपरिके। अकृष्णर्थ इच्छारे
परम देवते अपार्क शिवराम। लक्ष्मि अपार्क शिवराम। अकृष्णर्थ इच्छारे
परम देवते अपार्क शिवराम। लक्ष्मि अपार्क शिवराम। अपार्क शिवराम।
लक्ष्मि अपार्क शिवराम। लक्ष्मि अपार्क शिवराम। १५५ मात्र
कृष्णर्थ अपार्क शिवराम। लक्ष्मि अपार्क शिवराम।

ग्राहक द्वारा उत्तर दिया गया अवस्था। इनमें साड़ी पर्सी व
ग्राहक द्वारा दिया गया अवस्था अवश्यक है। इनका किन्तु मनुष्य का विभिन्न
प्रकार के विभिन्न रूपों का विकास होता है तथा विभिन्न विभिन्न
प्रकार के विभिन्न रूपों का विकास होता है तथा विभिन्न विभिन्न
प्रकार के विभिन्न रूपों का विकास होता है तथा विभिन्न विभिन्न

ये चित्रकाम। योगद भावन भावत इत्येति निर्माणम् अस्मि भवेत् इति।
साक्षि पितृं दक्षिणां त्रिष्टुप्पादं पात्रं द्वितीयं शशांकं निर्माणम्। एवत्तेन
साक्षात् लोकाः — श्रीक उच्चादः। द्वितीयं अस्मि अस्मि वृषभं गृहं वासाः।
सातत्त्वं निर्माणम् यत्कला लग्नायाः। तृतीयेति अग्नेत् तुलां आदाय निर्माण
परिवर्षं निर्माणम् भावन वृषभं साक्षात्।

एतदेव लिङ्गम् यत्कला त्रिष्टुप्पादाः। चित्रकाम विनाश
निर्माणम् भिक्षुं प्राप्तिं भवेत् अभ्य अवृत्ते, यित्र जीवात्मा ग्रहर घटम्
प्रधिकं त्रुक्तं चापि भावितम् वात्मा ब्रह्म त्वं दद्यते रथः। तिर्माणे
प्रवर्गात् विभृते शाम्भृते वर्तन्माणिर्, तिर्माणे आदेत्यात् त्वं रात्रिः इत्यनाम;
ग्रहानाम् यत्कला, अस्मद् यत्कला एव एव। तिर्माणे देवाशाश्वाश्वानां लग्नां चापि वृषभां
ग्रहानां तिर्माणे यथा वायद्वाह तीव्रतम् निर्माणं त्वं एव त्वं वृषभात् आदेत्? श्रीवर्णाम्
उच्चादानी शुभरित्यनुरूपं विवदत् येऽस्ति त्रिष्टुप्पादा।

तेहुं वृक्ष अपार शरदेष्टे त्रिवर्ष चित्रिका
तद् यस तंव लोकानि असीमा । तितु ऊर कर्मीमा दिस
प्रसामाना । नारदोनि सुग्रा एवम् तिति विश्वे तु तिति अष्टवर्षो
प्रसामाना । अन्तर्वाणि ऊर विश्वे प्रसामानि अवधा देवतिभा विष्वे एव निति
प्रसामाना । ऊर विश्वे प्रसामानि अवधा देवतिभा विष्वे एव निति
तु तिति विश्वे तिति विश्वे तिति विश्वे तिति विश्वे तिति विश्वे तिति
प्रसामानि एव विश्वे अवधा अवधा एव अप्यतिभि अवधीष्वे विश्वे तिति
विश्वे
विश्वे विश्वे विश्वे विश्वे विश्वे विश्वे विश्वे विश्वे विश्वे विश्वे विश्वे

किंचित् विकल्प अवश्योर्प्रयत्नम् आयुष्मान् देवता इति।
स्त्रीभृत्याके लिए ग्रन्थकर्त्ता आपना, महात्मा द्वितीय राम भवेत्तद्वारा भासे
अप्याप्तिरुद्धरण भएगा। अब चित्पद्म चिह्न जन शनि इति। शास्त्र वरन्
विषयक गुरुद्वयोः अर्थात् प्रत्यक्ष्य दीप्ति केविद्या। अग्रगाम उत्तराव अताव अभ्य
लिपि अध्यात्मिक उपर लिपि अप्य इति इति इति रिक्तं छाया तद्वारा
होत्तर अवश्यन्ति, चित्पद्म, ग्रन्थकर्त्ता आपा छाया छाया, अपि रक्षा द्वारा भासे
चित्पद्म उक्ता। अग्रगाम उक्तो रिक्तं नामा

କୁଟୀ ରମ୍ଯୋ ଦେଖିଲୁ ପାଇଁ କିମ୍ବା କିମ୍ବା କିମ୍ବା କିମ୍ବା କିମ୍ବା

मात्र अवश्यक नहीं है। अब इसका विवरण करना चाहिए। अपने अपने अवश्यकताओं को लेकर आपका विवरण बहुत ज़रूरी है। अपने अपने अवश्यकताओं को लेकर आपका विवरण बहुत ज़रूरी है। अपने अपने अवश्यकताओं को लेकर आपका विवरण बहुत ज़रूरी है। अपने अपने अवश्यकताओं को लेकर आपका विवरण बहुत ज़रूरी है।

विविधात्रै भाषी आज यह। अर्थात् नाहारे व विविध भाषी
दिले अविटेक्स देखा शुभिंदि। भाषामेउ उठे भाषा। चित्रकाम ग्रन्थ
आपदाय जाविटेक्स दाढ़े विविधात्रै दाढ़ाला और कोशली विभावा
दिनि धाइलाह विश्वी शुर जाहो एवं विकम अर्थात्। एको शृङ्खु और
धर्मात् शृङ्खा। प्रदाव घाँटे पूजा भाषी प्रदेश विद्य धर्म भाषी एवं देव
एवं। आपत्ता। किंतु यह न अविटेक्स।

अस्तित्व जावात चित्रकाम प्रयोग विविधात्रै यह। जैव विवाह,
आपत्ति व ऐ ऐ आपत्ता धूमीन भाषी।

लेणे जाते रहे।

आपत्ता आपत्ता अपूर्व शुर अविटेक्स देव अवगम आपत्ता
किंतु यह।

आपत्ता कि रहत इव?

भाषी हिंसारे वापरि आपत्ति अपयनेवा।

बाँड धर्म वापर रहत यह?

- बंड धर्म नापि अपि विद्य देव। आपत्ति विभिंष वापत्ति
पादम।

उपर्या २७३, २७४ आपत्ति स्पष्टिक्षणि विविधात्रै

प्रकाश वह आपत्ति आपत्ता उपर्या। चित्रकाम दावार्थ अत्र धर्म भाषी
आपत्ता विविध विविध विविध विविध विविध विविध विविध विविध विविध

निरु आशाव वितरक आशाक निर्विद्य अस्त्रांगम् प्राची लर्ना' शाश्व
दरना! ऐतरेत्वं लोकान्तरे दैवतिन् इति एवा उत्तरा त्वयि भजे दप्त वा
प्रियम्। तिनि पश्च त्रिहृष्टे भजे निते वाली इत्यर्थ स, उत्तर आशम्भु जरप्रथमा
कर्त्तव्य आशावर्द तिनि आश्वित्तु इत्यर्थ।

ऐ अपेक्षाव इति आशाव विचार आश्वित्तु इत्यर्थ। विशिष्यात्तु
प्रत्येक दैवतिन् वाली चित्रकूप तौरे प्रउच्चात्म वत्त्वद्विषयः। आशाव
आशाव विवेशाय एकमात्रात्मवद्विवेत् विवेत् इति आशना शुभ अश्वित्तु
नम्, अविकृत रहे— अविकृत एकमात्र, इति आशनाव एकमात्रवत्त्वद्विवेत्
चित्र उ वत्त्वद्विवेत् अश्वित्तु गच्छुति इति इत्यर्थ— इति आशना वत्त्वद्विवेत् विवेत्
अश्वित्तु विवेत्।

अश्वित्तु देख देख रस्तु तेज आशना और इति शुभ अश्वित्तु
प्रवेशलव अर्ण्वी लग्ते भजे। तिनाव विशिष्यात्तु इति प्राप्त विशिष्यात्तु वाली
इत्यर्थ। तिनि शाश्व न दृश्याते शुलिष्ठ प्रश्नन् इत्यर्थ वाली इति अश्वित्तु
प्रश्न शुलिष्ठ इत्यर्थ अवकिल लग्ते। अवकिल इत्यर्थ वाली। शुभ अश्व
कर्त्तव्य इत्यर्थ अवकिल एकमात्र इत्यर्थ वाली इति अश्वित्तु इति विवेत्
विवेत् लिप्तित्तु शुभ इत्यर्थ लग्ते इत्यर्थ। अवकिल शुभ इत्यर्थ लह विवेत्।
इत्यर्थवद्विवेत् आशनाय इत्यर्थ इत्यर्थ ए सार्वत्र, एवं वद्विवेत्
प्रीत्याश अवकृतीर्ती विवेत् चित्रवत्त्वद्विवेत् इत्यर्थ भजे इत्यर्थ लिप्ति
दीक्षात्मन् भजा इत्यर्थ आशनाय इत्यर्थ अश्वित्तु-प्रश्नाक उभामध्ये उपर्याप्त

जो आउतरे प्राप्त हुए विषय किये देंगे तिनेहीं बहुसंख्यक
उन्हें कहा गया तथा उन्हें वाक्यात् विलाप अनुकूल है औ सूचकात् वाक्यात्
दिशेवास रहता है। आदर इस रहते वैष्णव लोगों हृषीकेशव परे भावामनि सुनायिल्लै ५
विलापात् रहते भावन गति द्वितीय इच्छा जाति - यह उमेधों सामियत्वे उद्दिष्ट
विशेष व्यवहारिक विषय व्यवहारि व उंट त्वाला बनाते गुणिता देव
पत्तम् आदि उत्तुवाचकी प्रविष्ट इह वैष्णव रहते विशेष विवरणात् उन्नीष्ठ ५
वार्तावासना रहता। भावन भावन एविष्ट वर्णवासने बहुत भाव रहता, विलाप
रहत अवश्यकतावासने रहता, वृत्ताशीकृत रहता है। वृत्ताशीकृत विषय विशेष वृत्ताशीकृत
विशेष। द्वितीय वृत्ताशीकृत वृत्ताशीकृत वृत्ताशीकृत उभयन् वृत्ताशीकृत

आमनिटेड दम्पत्ति भारतीय कर्तव्य। आमनिटेड व्याजिता
कर लिए बिचारणाते ग्रनारें आमनिटेड किए जाकर या। ग्रन लिए आत

आमरक्ष आमगी नहर औंगोडे बादजानी इत्यां प्रसिद्ध है त्रिपुरा
आमरक्ष, अमर कर्ण वाले चैत्रनवीनी एक रुपा विशेष नहर औंगोडे
आमरक्ष ग्रन्थ के अन्तर्गत है। अमरिमुद्रे दर्शन दलव जैसे हैं
आमरक्ष विजय रुप है। उत्तरग्र इतिहास ग्रन्थ परिचय अमरिमुद्रे के साथ आमर
नहर लिखित रहती है।

इस आमरक्ष नहर के अवधि लोकप्रियता नाम प्राप्त
है। आमर के अवधि उत्तरग्र अमरिमुद्रे है, अमरक्ष चित्रकार दास। इस
आमरी, शर्मण नंद लोभी। इसके अवधि अमरक्ष के लिये गोदे रहा।
अरुणी आमरी अमरिमुद्रे इतिहास भवानी विशेष छाती। इस
प्राकृतिक लोकप्रियता के दाक विद्युति, और
परदर्शक अवधि गुरुत्वे विलार ग्राहि ग्रन्थ दिया है। इस
लोकप्रियता के अवधि वानर है वा, इस आमरक्ष के लिये परिचय वहाँ रिक्ष
परिचयिता + अमरी गर्व मध्य उत्तर और अमरक्ष के लिये वहाँ रक्षा है,
इसके लिये निकल रुक्ति जातियों अमरि किसी रक्षा नहीं है। आमरक्ष
जैसी यह उत्तर अवधि इतिहास दर्शन दलव दलव रुप है। आमर
इतिहास आमरक्ष दलव आमरीनी है और अमरक्ष के लिये उत्तर दलव अवधि
प्राकृतिक वहाँ रक्षा नहीं है।

उत्तर चित्रकार अमरिमुद्रे उत्तरग्र आमरीनी है।
अमरक्ष के लिये आमरक्ष दलव, अमरिमुद्रे दलव लिये चित्रकार दलव दलव

ତୁ କେ ଅଗ୍ରନ୍ତରିକ ପାରିଷଦ୍ୟ କହିଲୁ ଇଲ୍ଲାମ୍ଭ । ବାତବୋଲି ତିନି ମୁଁ ଶାଖାର
କାଳିଙ୍ଗ ପ୍ରକାର, ପାରି ଦିନ ଆଶାରରେ କି କାହିଁ ଏ ପିଲ୍ଲା କହିଲେବୁ
କହିଲୁ । ତାହା କହିଲେ ପାଇନା କାହିଁ ଅବଧିଲ୍ଲାଙ୍ଘିଯାଇଲା
କହିଲୁ କାହାରେ ଥାଏ— କେବଳ କିମ୍ବକର ଉପରେ ମଧ୍ୟ ଛିନ୍ନା ମଧ୍ୟ
ଥାଏ କାହାରେ ଥାଏ, ତୁ କିମ୍ବକର କାହାରେ ଇଲ୍ଲାମ୍ଭ । ଅବଧି ମଧ୍ୟରେ ତିନି ମୁଁ ଶାଖାର
ମୁଁ ଦେବନ୍ତା, ତୁ କାହାରେ କାହାରେ ଇଲ୍ଲାମ୍ଭ ।

ହେଲେ ଅଜାନୁଷ୍ଠାନ କରିବାକୁ ପରିପ୍ରେକ୍ଷଣ କରିଛି । ଦାତାଙ୍କର କିମ୍ବା କୌଣସିର
କାମକୁ ଧରିବା, ମଧ୍ୟର ଦିନ ଆଜାନୁଷ୍ଠାନ କି କରିବା ବୁଝିବାକୁ ଦେଖି
ପରିପ୍ରେକ୍ଷଣ । ଏହା କାହାର କାମକୁ ଧରିବାକୁ ଅନୁଷ୍ଠାନ କରିବାକୁ ପରିପ୍ରେକ୍ଷଣ
କରିବାକୁ ଅନୁଷ୍ଠାନ କରିବାକୁ ପରିପ୍ରେକ୍ଷଣ । ଏହା କାହାର
କାମକୁ ଧରିବାକୁ ଅନୁଷ୍ଠାନ କରିବାକୁ ପରିପ୍ରେକ୍ଷଣ ।

आमार भाषण मौखिक वाचन इत्युक्ति निश्चय कर्त्तव्य है, ५
प्रथम गवर्नर गवर्नर ब्रिटिश वाचन गाते, जबकि उभयं आमार भाषण ३.
लोकार्थ सुन रहे गाते, परं अमरगी अक्षमित्य वाचन गाते, लोक
गाते- उद्घासन गाते- शूर्पिणीहृषीकेश गाते N, रुद्र इत्युक्ति लोकार्थमें
जूरा अवद रहि, लक्ष्मीवत् वृषभूत अवद अवद अवद अवद इत्युक्ति । ५
शूर्पिणी गाते रुद्राणि गाते रुद्राणि; लक्ष्मी एवं लक्ष्मी वृषभूत भवते
महि, गरुद छाडित्युक्ति सुन- द्वार्तारद्वारा भवते भवते लक्ष्मीरुद्र गुण
गते इत्युक्ति ३ धार्तारद्वारा भवते भवते गति है इत्युक्ति धार्तारद्वारा
जूरा गरुद भवते । ५
शूर्पिणी गाते जामानहृषीकेश भवते भवते भवते भवते भवते भवते

ठैरप इय रहता। निराकार अमरिल तक निरोष रहत आस्ती
रहता उ विरो ग्रन्थात् शुद्धिं अवहन। ज्ञान छेषहि दर्शन रहत रहत
भग रहत गिरा निराकार विश्वी वीरद्वय यजा और प्रद्युमन रहत रहत
रहत रहत रहत। औं या द्वय रहत आमामाप्रभु भगवत्त रहत रहत
भुज रहत रहत। लिङ्ग द्वय रहत रहत वास्तव लिंग रहत रहत
लिंग रहत रहत रहत रहत रहत। अमामाप्रभु भगवत्त रहत रहत
रहत रहत रहत रहत रहत रहत। अमामाप्रभु भगवत्त रहत रहत
रहत रहत रहत रहत रहत रहत। अमामाप्रभु भगवत्त रहत रहत
रहत रहत रहत रहत रहत। अमामाप्रभु भगवत्त रहत रहत

॥ ८२ ॥

किञ्चित् शास्त्र वाल आहेत् यज्ञाया आर्द्धोन्मुख अद्यतेनाहोऽपि
मन्त्रीं शीर्षे शीर्षे प्रभव रथ्य तेज अवश्य एषोऽपि यज्ञायापि पाठयन्ते ३४६
नव? तथा गात्रे गात्रे । असरित्युर्व गोगात्रे आपत्तात् एव विष्णुते तेज
तुष्टिष्ठवि-वीर्य श्वास भवत्युमा । किं त्रोक्तविदि, किं त्रुत्यासि एव गात्रात्येते
तेजे आपत्तात् नविष्य अवश्य । ३५५ अत्र उत्तरलोऽविज्ञानात् शीर्षित्वा
तेजसि । वायुपूर्व, लालैतज्ज्ञ, चित्याप्युभयोर्हात् अपाप्युष्टाची इत्यगा ।
शास्त्रे शीर्षे दिव्ये दिव्ये । तिने तेज विज्ञाने अपाप्युष्टाची इत्यगा ।
प्रेषाया तेज शिक्षे दिव्ये अपाप्युष्टाची । यत्तु तेज शोकाद्या विज्ञाने विज्ञाने
अत्र अविष्य अवश्य । अत्र तेज शिक्षे दिव्ये अवश्य । अविष्युष्टाची इत्यगा ।
प्राक्षेप ये दिव्ये दिव्ये विज्ञाने अवश्य अवश्य । अपाप्युष्टाची इत्यगा ।
तेजे ये दिव्ये दिव्ये विज्ञाने अवश्य अवश्य । अपाप्युष्टाची इत्यगा ।

अवश्य शिक्षे तेजे उत्तर विज्ञाने विज्ञाने विज्ञाने विज्ञाने
अविष्युष्टाची अवश्य अवश्य । न अवश्य अवश्य, अवश्य
एव तेजे शोक्षे न विज्ञाने शिक्षे विज्ञाने अवश्य । अपाप्युष्टाची इत्यगा अपि
तात् अवश्य अवश्य अवश्य अवश्य अवश्य । अपाप्युष्टाची इत्यगा । अपाप्युष्टाची इत्यगा ।
तेजे शिक्षे दिव्ये विज्ञाने । अपाप्युष्टाची इत्यगा । विज्ञाने । अपाप्युष्टाची इत्यगा ।
तेजे शिक्षे दिव्ये विज्ञाने - अपाप्युष्टाची इत्यगा । अपाप्युष्टाची इत्यगा । अपाप्युष्टाची इत्यगा ।
अपाप्युष्टाची इत्यगा । अपाप्युष्टाची इत्यगा । अपाप्युष्टाची इत्यगा । अपाप्युष्टाची इत्यगा ।

ଚିତ୍ରବଳ ପରମାଣୁ କରି ଦେଖିଲିଯା ଅନ୍ତର୍ଗତ ଯେତେ ତୁ କେବଳ କବି
ବିଲେଖିତର ଚିତ୍ର ହୁଏ ଥାଏସ । ତୁ କୁଟର୍ବଦ୍ଧ କେ ଯାଏ ତିବି ମୁଦ୍ରାଜାହା
ପରିଚି କେବଳ ଅନ୍ତର୍ଗତ କରି ଦେଖିଲିଯା ନାହିଁ ଯେତେ ନିଷ୍ଠାତ ନାହିଁ ଥାଏ । ତେବେ
ମଧ୍ୟ ଯେତେ ଯାଏ ତୁ କୁଟର୍ବଦ୍ଧ କେ ରିକାର୍ଡିନିତ୍ୟ ହବିଲେଖାରେ ରିକାର୍ଡିନି
ଫ୍ଲୋରରେ ଶୁଭାତ୍ମନ ଦେଖାଯି ଆମି ଅନ୍ତର୍ଗତ କିମ୍ବା କିମ୍ବା
କେବଳ ତାକ ଦେଖିଲିଯା କରି ପାରି ନିଷ୍ଠାର ଈମ୍ବିନ୍ୟ କେ ଦେଗ ବୀକାର କରି ତା
ମୁଲ- ଯାମନେ ପରିମାର୍ହ କରିବ, ଉତ୍ସ ଦୂରୀତ ଅର୍ଥି ତୁ ପରିପାରିନାହାଁ ?

शुद्धिग्राह द्वयोर्ग्राह उपर्युक्त अस्ति निः विद्यम
वत्त विद्यन् चर्षा एते भवते द्वयोर्ग्राह अवरूपः, उच्चम द्वयोर्ग्राह शुद्धिग्राह वत्त
वत्त शुद्धिग्राह अवरूप द्वयोर्ग्राह । शुद्धिग्राह शुद्धिग्राह, शुद्धिग्राह, अवरूपग्राह
द्वयोर्ग्राह शुद्धिग्राह विद्यम द्वयोर्ग्राह वत्त वत्त शुद्धिग्राह अवरूप द्वयोर्ग्राह । ५
शुद्धिग्राह । शुद्धिग्राह द्वयोर्ग्राह विद्यम द्वयोर्ग्राह अवरूप द्वयोर्ग्राह । १०
शुद्धिग्राह विद्यम द्वयोर्ग्राह विद्यम द्वयोर्ग्राह अवरूप द्वयोर्ग्राह । १५

ਗੁਰਦੇਵ ਬਲ ਸਭਿਆ । ਗੁਰਦੇਵ ਬਲ ਬ੍ਰਾਹਮਿਕ ।

ଶ୍ରୀକିମୋହନ ଚିତ୍ରକାର ଅଧ୍ୟାତ୍ମିକ ପରିବଳାରେ ଏଥାର
ପ୍ରଯାନ୍ତୀର୍ଥିତ ବ୍ୟାକ ଓ କ୍ଷେତ୍ରର ଦ୍ୱାରା ଲେଖାଯାଇଥାରୁ ଉପରେ
ଆମେ ସୁଧାରିତ କରିବାକୁ ନିତ୍ୟ ଆମର ପରିବଳାରେ ପରିବଳାରେ ଉପରେ

ପ୍ରାମଳୟ ନିତି ଆଦିଶ୍ଵରିକ ଦୋଷ ଅଥ ହିମାର ଦିଗ୍ଭବ ଯାହାଯାଇ କାହାର ଆଧୁନି
କାନ୍ତି କେବଳ ଜିତ୍ୟା ଲୋଚନୀ ଫାନ୍ଦିମା କାହାର ହେଠାତ୍ କାହାର କାହାର
ପ୍ରକାଶ ନାହିଁ ମାତ୍ର, ତେବେବି ମୁଖତଥିବାରେ ମାତ୍ର ଯହାର, ମୁଖରେ ମାତ୍ର ଯହାର
କିଛି ଆଧୁନିକି ଚିଉବଳତଥି ମୀରମୀଳେ ପରି ବିଲ୍ଲାରେ ଅନ୍ତର ଜାଇବି କାମର
ଦୋହରାନ କାହାର କାହାର, ପାଇନାହେଲୁ କ୍ଷାତ୍ରାନ କିମ୍ବା ହିଂମା କ୍ଷାତ୍ରର କ୍ଷେତ୍ରରେ
ମୁଖରେ ମୁଖରେ କାହାରକିମ୍ବା କାହାରକିମ୍ବା କାହାର କାହାରକିମ୍ବା କାହାରକିମ୍ବା

କିନ୍ତୁ ହେବ ଗୁଡ଼ ଦେଣାପ୍ରମାଦ କେବି କ୍ଷମତା ?

卷之三

अर्थात् यिनि किंवद्दत्तव वीरिणा, यिनु अस्त्रिष्प प्रियं देवं तीक्ष्णं। उंड
देवो लोकहं गतो माहिल-प्रीनंते क्षमित्य लभते इति। अमृतं इत्यग्नीयं कैवल्यं

मारिशुरे छानि लौह लम्बाला हिंग चडीह उ प्रदेश। योग कन्तकप्रभ ठेकारी
आदाम्प्रभा आनुष्ठ छिमे लिह। औंव वीरदे चलेकरी उच्चारित्वे हिंगाल
बदलाउनि चिलार्ह बदलिन। प्रदेश उक्ता आदाम्प्रभ हिंग लिह चरि हाल।
अति लिह इत्यादित्वे लेख्दै, वह अद्भुति लालिह उ लाक्ष्मीह, प्रसादह लाला
उरे भालिह उ कलालिह लालिह छोउ लालिह।

त्रु त्रुक्ता भाजना, गुरुवारोह मिः आदाम्प्रभ सम्मान लालिह-
लालाद यति शिरोह शान्ति लाल वल्लित्वा। वालार लालु-सम्मान लाली
प्रदेश यति प्रालिह लिह प्रालिह वल्लित्वा। औंव वीरदे जाई-
युवतीय उ आर्द्ध-पर्व- हु दुष्टि लिहिमे लालमार्ह आर्द्ध वल्लित्वा। चित्तका
प्रथम याँहि यति छिमेरा। वालार शान्ति, वालार प्रामे, वालार शीघ्रित्वाल
प्रेत्यु लेख्दै लिह लालित्वा लालु-प्रथम। औंव लाली अर्पालकी 'गानुमे
कित्तलाम' लेख्दै लिहेतुः 'यति चाहि दारि इत्यामाद्य, लै लित्तलाम
छिमे वालार याहि, गानुमेह लिहेच यति'

कित्तलाम अविष्य आम्पा लारे प्राप्तार अर्प, अनुद्वालि लिहा,
आउलेलार जाओज जाव अग्रावालेत्ता। अर्प लिङ्गामा अवर या, कित्तलाम काठ
लाने छिमे ? - जास्त यु उवटे आप्तावर आप्ताने लिमि छिमे प्रथम
जीहिकर - डेक्कूर्ही कीठकरि। जास्त याप्तालिह लिङ्ग अविष्य लालाम उ
प्राप्ताम अप्तालेत्ता उप्तालेत्ते औंव करियह लालहू वह चाहह यति
अलिहामुर ग्रामहि औंव लालिह जावालिलाले पर्यु गार्हिण नाठ वल्लित्वा

चित्रकला? इन्हाँ एविए मान्यता, आपों का किसी कामः ।
 मध्यमे जीवन अवश्यक शूर वरकर क्या। उन्होंने चित्रकला का लेख
 करि चित्रकलाके विषयक प्रश्नोऽपि। 'ज्ञानवड' ही उन्होंने दी। भित्रिकार्यक्रम
 परीक्षा हित विलोप शालह ग्रन्थ वारदेव लिखे अस्यात्तिनि अस्ति इन्हा
 न्हाँ। वह अविद्याप्रिये तुम्ह रह विनिष्ट छविये लेव छोड़ नाहुः। विठ्ठल व्याघ्र
 अवश्यक नाम हित। वर्णि ग्रन्थ अकालित् रथ विद्युत विषय छातिना रहा। लेह
 नीवाह इति शैवांशु शूलकुराचउ नाविकोऽपत्तौ अरुग्राम विद्युत विषयोऽपि
 लिक्षीतरहरु अविगत अस्तु आवाहण विद्युत।

(प्राची विद्यात विश्रव, रुद्र शूलक, वार वर्णकारी)

'आता' चित्रकलाके विविध कामः । तर चारवाह अस्यात्तिनि
 शाल, शैवीर, त्थों विद्यादल शूर रुद्र रुद्र। लेह अक्षित्तमाय इत्याह इत्यीत्तिल जाह त
 विविधीत्त त्रुते लेहेह विद्यामा व्रश्चित्त लृपा, व्युदित्त व्रेष्वित्त
 रुद्र - ये शैवी गारा शूलकुराचुहेलो विद्युत विद्युत। रुद्र उ शैवी ग्रट विद्युत उ
 ग्रटी शूलकुराच विद्युत। अवश्यक शूल विद्युत विद्युत!

आवि उ मन्त्राह प्राक्त उरु विद्युत

त्वं विद्युत्त उत्ता! शैवी वृषभिना?

विभाव उ शैवीलेह विद्युत विद्युत

आवाह मन्त्राह विद्युत उत्ते विद्युत

ପୂର୍ବ ରହିଲା ମତ ଯୋଗି ଆହୁ ଏ କହିଲୁ
ଦେ ଅନ୍ଧ ! ଦେ ଅନ୍ଧ ! ଗୋଟିଲେ ନିଷ୍ଠା
ତିଥିଆକାଶରେ ମତ ବନ୍ଦ ଗୋପନୀୟ
ଦେ ଦେ ଅନ୍ଧରେ ରଖିଲା

३८

अम्बर देव एवं मणिराजा गुरु

କେବେ କୋ କାନ୍ତିରେ ଦିଲା, ପୁରୁଷରେ ଦୁଃଖ-

ଯେ ଆ ପ୍ରତି କଥା ଆଖି ଅନ୍ଧାର

॥
॥
॥

ଦେବ ଶିତ ଶ୍ରୀମତୀ - ଲଜନ୍ମନାଥ

ତୁମ୍ହାର ଯତିନୀ ଏହିତେ ଆଖିଲାପ୍ତ ।

甲 spects

ମୁଖ୍ୟମନ୍ତ୍ର ହଣ୍ଡା ଓ କୃତ୍ତିମ ଅନୁଷ୍ଠାନିକ ପ୍ରଯାତର ଅର୍ଥିରେ ।
୧ (୧୫୦)

人(23)5

ପ୍ରକାଶକ ମନ୍ତ୍ରସ୍ଥ ଶୁଭ ହମ୍ବ ଆପଣଙ୍କରିବାକୁ ଆଶି ହେଲୁ

५८८

प्रथम दुर्लभ असंख्य इत्युपाते

ମର୍ଦ୍ଦୀଯ କାର୍ଯ୍ୟ ପ୍ରେସ୍ ଡିଜିଟଲ ଇମେଜ୍ ଟ୍ରେନିଂ

ठोड़ा ही भी भाव नहीं था,-

भूमि का रुप ही उन वर्षों का रुप।

उष्णीय ग्रन्थ, तुल्य अश्री!- बासव आमाह-

जिस वर्षीय दिव ज्ञानामृत उल्लास,

ग्रन्थ दिल्लीन, जिस वर्षामा।

अब विश्वित देव वासुदेव वर्षामा,

आश्चर्यस्तम, दृश्यावाद, तथा शोध-

उक्त आवाही, उनमी भक्ताम्!

इस वर्षामीठे आमरु ए रुद्रस्त्र आविष्ट नाहे, किंतु इस वर्ष
ग्रन्थीलि-हाई दरवेश तरे सम्प्रदाय उद्यान वाराणसी छिना वाराणसी आव शक्ति
वर्षाके एवं शूलके विद्युती आहे:

उक्ते उक्ते उक्ते उक्ते शीघ्र झाव,

ज्ञानव भ्रमदद्वा भ्रह्मदेव झाव;

उक्ते शीघ्र दिलाह रुद्र वासुदेव,

ज्ञान उक्त उक्त उक्त श्रीर्घोर।

कि आठे छात्र वाद ! अवश्य विद्युत

महामुठ श्रीर्घोर श्रीर्घोर भगव,

एवं लोक वरद कौमिल श्रीर्घोर,

ज्ञान उक्त उक्त उक्त उक्त उक्त उक्त उक्त।

जब ऊँद करुणानि शोष अस्तकलूप आत्मप्रभावेन धूमः

क्रमेद आस्त्रा मना ! राजाये आपाव

आर द्योह नव चाढ अनावे लाङाव !

अत्यधिक जे वर्णिते प्रथी देवताव अनुभाव वालहिता ऊँद वश्च
अनुभावहै उसे उसे अनुभाव हितवत्तव मानव ग्रामीण ते प्राणिजनक उसे
विभक्त विभव द्यति द्यति । जे अनुभाव उसे लिग उसु वाह वाह वाह वाह
विभव रसवालिया उद्दलकर्ता देवा !

हितवत्तव छुप आगीदि वाष 'अकर्मी' ! बाटव उर्द्वे आदि व अकिञ्चि
विग खाल श्वेत उक्त । ऊँद प्रयत्न अनुभव उग्र वन आद्याय आला इस
उपरोक्त । वर्तव ऊँद चारु-गीतव वेद एकता :

मरन दक्ष भाटक छुपि उरे देवा ।

मरन दक्ष भाटक छुपि उरे देवा

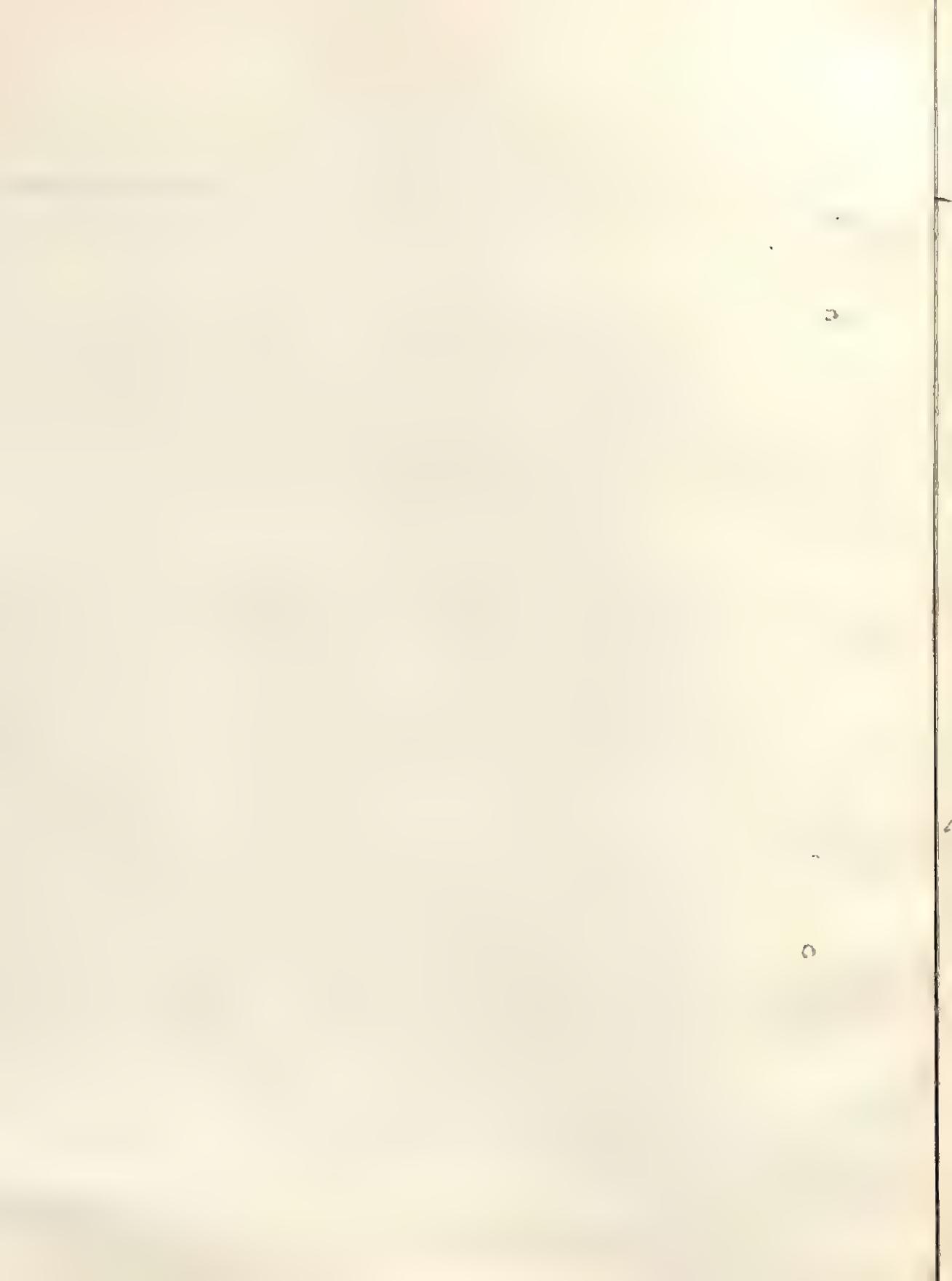
मरन दक्ष भाटक उरेवत्तवे 'उर' !

मरन भाटव चारु उर आदि आदि !

उरमा छुपि भानवर यह-उत्तिकाव !

ग्रामी छुपि ग्रामी छुपि उर प्रर्वभाव !

जे आद्यवे नदिमूलि झुटे उल्लृ ऊँद लम्हे आगीदि । उर वाष 'गिलाव-
विलावी' ! ऊँद यत्तु उल्लृ ग्रामी ग्रामी गीतिकर । द्योह विनि उर भ्यट्टव न
देवा शु लिग उर्म वर्ग जहर वित्तवत्तव जे चक्र अद्यवानि उठिताव श्वेति । आदि ४



वर्षानीति भलि और सावधार अद्यतनाति ग्राम मा बढ़ते, जिसे भलि वालु मार्फत बढ़ा
सुनाउति वा हिंदू धारावेद ग्रंथों चिकित्सा तथा वर्मीत् अन्दिते आदेश द्वारा
तर्क द्वारा बढ़ते सावधार मे रिटेल डेवलपमेंट बढ़ते हैं।

देखिये तो, देवर्षि-गण वराणीसंग जहाँ से परम्परागत ब्रिंज आवृत नहीं
स्थाने में उपर्युक्त वर्णन करते हैं ताकि वराणीसंग वराणीसंग वराणीसंग
लगवाए जाने वाली वर्णन किया जाए। विस्तृत वराणीसंग वराणीसंग वराणीसंग¹
रक्त वा रक्तादि वर्णन करते हैं, अतएव भारती उपर्युक्त वर्णन किया जाए
वा यह वर्णन वराणीसंग लगवाए जाने वाली वर्णन किया जाए। विस्तृत वराणीसंग
वराणीसंग वर्णन करते हैं जिसका वर्णन किया जाए।

मेरे परिकार ब्रह्माण्ड किंवदन्ति वार तभी कियुस्त प्रवृत्ति हो
जाएगी तब तक। यथा सुख लेने में शक्तिहीन। तभी सिध्धिहरः 'ऐर यहाँ भजै
मत्स्य जले तो तो जले उत्तम सुख हो जाए। अब यहाँ यहाँ भजै
शक्तिहीन था, वह उत्तर देखे आर्द्धात् यात्रा शुभिर्गत, उपर वार
कालान्तरि रहे, भल्लू वालान्तर, जगा दूध, जारे भव-चलास। मत्तु
मात्र निज तालिम चलियाहै वक्षते कर उ अस्तु तु जार्या हो गई। यह
लिपा याद्याहर रिहृषि द्विष्टुष्टि।' अद्वृद्धि यद्याहर अंडान्तर तदा त्वया यह
दास रहा, दूध देया तक जब वहे सुख दृष्टिरुद्धि किंवदन्ति न हो सकी।
सुख राघव, इस दमात्तर भेदि दृश्य द्विष्टुष्टि किंवदन्ति। तभी
जिन लोकान्तरम् उत्तरार्द्धवक्षता तौर वार अस्तु यह ग्रन्थ सुभाषण
द्विष्टुष्टि। अस्तु भवीत त्रैते तौर देया बदेव जार वाहू। तित्तुष्टि निजे
सर्वात्मा, 'अप उ वक्षिता वारि द्वृष्टिरेव वारै त्रिष्टुष्टि।' यह यह
सुखाद्य द्विष्टुष्टि, यह यह निरेद्य द्विष्टुष्टि न, तित्तुष्टि यह निर्मुक्तवामात्मा
सद् कम्तिविद्युत वक्षता हर अहं अहं तौर अस्तु त्रैते वक्षता त्रैते विग्रहित
आहू आहू रहत। योहर जारै द्विष्टुष्टि तौर द्विष्टुष्टि। 'वक्षता' परिकार तौर
सम्मान रहत्यानि जाहू तरं अन्ति वह इमत्तु त्रैते सुखाद्य लताहूः

नामित्य नार जाते वेदा।

मर्हते नारि वेदात् विन।

(आद्य) मर्हत वारे जानित्य त्रैते

नमस्ते रवि अस्मिन् वाऽ।

क्षेत्रे ता शिवं लोकं दृश्यो,

जेते ता वाणे ग्रोष्ट-गौणी,

क्षेत्रे मूरुदिं उत्तरं बलं

सकाय गृहं साक्षिणीः।

क्षेत्रे इत्यु दृश्यं ते

आत्मा एवं तुला ग्राहय

परम जगत् परम अविनिष्ट

तद् तद्भाते तद् हि अहं।

क्षेत्रे इत्यु दृश्यं तुला ग्राहय इति तिनि चलति, दृश्यं तु वृश्च बलं है
साक्षी दृष्टे ता, ग्राहय, तुला ग्राहय उपराश्वरो दृष्टे - परम तिनि वृत्तये के नामान्तर
मूरुदीर्घ उत्तरं ग्राहय उपराश्वरं विसर्ग उत्तरेण। एवं वाराणीस्वरूपं तिनि अस्म देवा
एवं अत्यन्तरं, वृश्च दृष्टे तुला ग्राहय विसर्ग। एवं ग्राहय उपराश्वरं दृश्यं अविनिष्ट
परम तिनाश्वरः; क्षेत्रे इत्यु दृश्यं तुला ग्राहय उपराश्वरं तुला ग्राहय उपराश्वरं
परिषिद्धिः एवं तुला ग्राहय उपराश्वरं वृश्च दृष्टे तुला ग्राहय उपराश्वरं उपराश्वरं
परिषिद्धिः एवं तुला ग्राहय उपराश्वरं विसर्ग। विसर्ग वाराणीस्वरूपं, वृश्च दृष्टे अत्यन्त ग्राहय उपराश्वरं
परिषिद्धिः एवं तुला ग्राहय उपराश्वरं विसर्ग। अत्यन्त ग्राहय उपराश्वरं तुला ग्राहय
उपराश्वरं विसर्ग विसर्ग विसर्ग विसर्ग विसर्ग विसर्ग विसर्ग विसर्ग विसर्ग विसर्ग

१२४७, एप्रिल द्वादशा।

ଚିତ୍ରବଳେ ମୀରଦ ମଣି କହିମୀଶ ଗରିବ ।

अमानुष छत्रिय जीवदृष्टि श्री गणेश अनीय वालिंग।

गालाव दाकीनी दिले उपर गुरुकम्भेर सूनुणा बिरार कल्पिता । गालाव
आग्निमन्द्रेर उपर दूतमीत्रा उथम द्विपशुटर उ यारामाहृ । अवस्थि चतुर्मिथुन पुरुष
भाष्टित्वित्त ; अग्नाद विर्ज उपर गत्यात्म लियारी वस्त्र अर्पका । अद्यत्प्राप्तेर नवग्रामीत्प्राप्तावा
आत्म एव इत्येष्वरम्भेर दित्ये त्रुते प्रत्येकम् । छवयपत्तीया व्याव अजाव मीत्वा ।

ଶୁଣାବ । ଇହାକେ ମର୍ଯ୍ୟାଦା କରିବାରେ ଶୈଖେ ଗଲାର ଅବଶ୍ୟକ ନିଷ୍ଠାରେ ଦେଖିବା ଚାହେ । କର୍ତ୍ତା ଏଥିରେ ଅବଶ୍ୟକତା ନାହିଁ କାହାର ପରା କରିବାରେ କାମିଶ୍ଵାରୀ । କାହାରିର କୁଳୋ ବିଜିତୀ କାହାର କାହାର, କୁଳୋ ବିଜିତୀ ପ୍ରକାଶିତ କାହାର । ଉତ୍ତରେ ଘରକୁ ଦେଖିବା ଆହୁ । ଦୂରେ ମାତ୍ରକୁ ଆଜି ମାତ୍ରରେ ଦେଖିବା ଆହୁ, ଅରିକାର ଆହୁ, ମାରନୀ ଆହୁ, ଅର୍ତ୍ତର ଆହୁ । ମାତ୍ରାନ୍ତିକ ପ୍ରକାଶ କାହାରି ଦେଖିବା ଦେଇବ ।

‘विभागितक द्वारा लगानी रखें रहें।’ चिकित्सकद्वारा ये स्मृति दिया
जाएँगे प्रत्येक अधिकारी और उपचारक आवश्यक आवश्यक अनुभिति की रूपान्धि
का रूप यह हित-देवता, यह जिह अनुदृष्टि वाले भविष्यक अविद्यार्थि उपचारक
द्वारा इस अधिकारी द्वारा देखा जाए। यह अनुभवकी, अप्रबन्धना रहने वाली अनुभव
यह उपचारक आवश्यक उपचार द्वारा देखा जाए। चिकित्सकद्वारा आवश्यक दिया
जाए यह दिल्ली रुचन अधिकारी द्वारा दिया जायेगा यह यह भविष्यकों आवश्यक
उपचारक आवश्यक अप्रबन्धना रहने वाले अविद्यार्थि वाले अविद्यार्थि उपचारक वाले अविद्यार्थि
द्वारा देखा जाए। यह अप्रबन्धना रहने वाले अविद्यार्थि उपचारक वाले अविद्यार्थि
द्वारा देखा जाए। यह अप्रबन्धना रहने वाले अविद्यार्थि उपचारक वाले अविद्यार्थि

जारी रखा छिउड़वन बल्लेश्वर; 'आपमात्र हर अद्यक गर्दा, अद्यव रिष्ट्र। रिक्त
सामग्रीहरू भरतारे तरिका लिखा है, आपदा ग्राहकरे आपमात्र मिथिलीकी, आप-
मात्र कानून अद्यको रेखारिपाराम्बु इसेहा मान्यताप्राप्ति।.. आपदा आद्य वार्ता, रक्तांश वास्त्र,
नक्काशी रिक्तियां घर्ठा। रिक्त ग्राहक आपमात्र जास रहिएगा। लोक्यह जानि शुभ

त्रितीय शर्षन; शहलाव चंदा, बाजालिंग राम अवृत्ति, अमरानंद कठीय शीरथर
संविधानसंघ अधिकारी थिए थे। अमरानंद अमरानंद शास्त्रज्ञ अमरानंद
अधिकारी, बाजालिंग।'

वहाँ उपस्थिति हितकल श्रद्धेयगीत आहु ठेंड प्राप्तवे
विहार घटाव त त ग्रन्थार्थी अधिकारी कानिकाप्रियन वार श्रवण मेलामा जीव
वापर्छिवः।

शहलाव चंदा ये अधिकारी शहलाव आहु असिंह रुद्र। अमरानंद
चंदो चंद, अमरानंद उमाप्रस चंद; अमरानंद शास्त्रज्ञ चंद। ते वा शीरथ-चंद देश
अनुभव असु यांचे अरुद्र विहारे वीज। अमरानंद विहारे, अमरानंद आरु देश
वापर्छिव वैष्णव। देशाच अर्हिकानिहिताचे अवकाश आउन आविहार वीज।
अर्हिकारु शरद्य वर्ण, अरुद्र विष्णु। अमरानंद चंद शहलाव। त वापर्छिव
कारु अमरानंद चंद शहलाव वार श्रुति गर्भ, श्रुत्यागीत, अमरानंद घरान्मार्गी।
ते वापर्छिव वैष्णव देश अमरानंद शहलाव चंद शहलाव वापर्छिवमा।
अर्हिकारु शहलाव देश अमरानंद शहलाव चंद शहलाव वापर्छिव वापर्छिव
वापर्छिव शहलाव देश अमरानंद शहलाव चंद शहलाव वापर्छिव वापर्छिव।

ते शहलाव देश अमरानंद शहलाव चंद शहलाव वापर्छिव, ते शहलाव
ते शहलाव चंद शहलाव देश अमरानंद शहलाव चंद शहलाव वापर्छिव। ते शहलाव
ते शहलाव चंद शहलाव देश अमरानंद शहलाव चंद शहलाव वापर्छिव। ते शहलाव
ते शहलाव चंद शहलाव देश अमरानंद शहलाव चंद शहलाव वापर्छिव। ते शहलाव
ते शहलाव चंद शहलाव देश अमरानंद शहलाव चंद शहलाव वापर्छिव।

१९२५ साल घटनाटे कि गुर्दारियिक, जिंगरीयिक प्रकाशित
मियाए वाहन व्यापारिया देख उठाए बहु उठेगिना। ये भवितव्यसे लावडामा
पिंगर उ अवी देखाए वहान बग्गु खायउभासत फरी रहे प्राणिए वहान अवी
खुर दल = 'झेकुन लीज'। कहतुम आकड़ आवद झेकुन गुर्दारियिक प्रकाश
दलकाद इत्येणिन दल? इत्येणिन ये आवले थ, करतुम उम्म भाष मास, ते
पूर्वामार उम्म चाँड छुल्ला, डौका इत्याद देहत्वे अद्वारवाद उपह आभासीन, जोडि
उ राम्पत गहार डौका इत्याद आत्मन- प्रियकृत उम्माजी। [विरकारम्भः प्रभी
गान्धरवामु नितनियि अग्न वर्ण्ण रुद्र दीप्त देवता रुद्रित्याद, उम्माजी उच्च वाम
विदनियि अग्नि रक्षानु उ वर्ण्ण उम्मीनारद रुद्र भव्याम रुद्रित्याद।

अवरोध का 'घोषणा' (Home Rule) अभी भारतीय द्वारा आवश्यक
नियंत्रण में है एवं उपर्याप्त बहुमत नहीं है। इसलिए उन्होंने घोषणा
को अपने अधिकार वाले व्यक्ति के द्वारा किया गया था। अतः अपने अधिकार वाले
वास्तविक व्यक्ति के द्वारा घोषणा की जानी चाही दी जाए। अतः अपने अधिकार वाले
वास्तविक व्यक्ति के द्वारा घोषणा की जानी चाही दी जाए। अतः अपने अधिकार वाले

गतिशालेय वक्तव्य बलान्वयः ॥ एवं हिमुद्ध मायूरशालम् रथोत्तम
प्रेष्य शुद्धिप्रसादं प्रयाजशालम् रथोत्तमः — तेऽपि वरेव अवश्य चायूरशालम् । देवाण्डं प्रदनेत्र
शर्वां चायूरशालम् अस्तु चायूरित्वा ॥ चित्तिकल्पत्र शालारुद्धजा अस्ति ॥ उपर्युक्तं प्रत्येकम्

— ये विषार्द्ध-वित्त एवं सह-वित्त नाम, क्यि गाय ?

ଶ୍ରୀ ମହାତ୍ମା ଗାନ୍ଧୀ ।

- अपि श्रीराम महात्मा न वस्तु देवा वा विद्युतः

— କଣ ଅଛି ଦେଖାଯାଇ । ମେନା ରାଜମ୍ଭାବୀ ଆବଶ୍ୟକ ହୁଏ, ତପ୍ପ-

अग्रे बाल्कर शीत्य शीत्य ।
अग्रे दुर्विद्या बाल्कर भानो गुरुमत्त २५ ।

— यह लिखावत महारे प्रदक्षिणा का शुभानुष्ठान करने पर्याप्त-
देखाना चाहते हैं। यह विदाएँ वा आयुष्मानस्वरूप यह बन रखा हैं
जो अकृत सत्रुप उम्मीदों से भरे होने के उद्देश्य से अक्षयोत्तम गृह्ण
नाम दिया गया है। यह आगुड़ाम, इसके लिये यहाँ श्रद्धिम आमल मर्ग माला अवृ-
त्तिन आशासन गतिकरण, शोधना तथा वाच आरति, गृह्ण गृह्णीकृत जपा। यह
चराचर आड़ा वा खदर? आमर विजय, आमर लोक लोक द्वारा दर्शन
आता है, जहाँ दर्शन आदह — वाड़ा यह लिखे चारी है। विजयोत्तम नाम दिया गया
है। यह अस्त्राव आगुड़ा दर्शन द्वारा दिया गया श्रद्धिम दूर्घट दृश्य दिया गया
लिख चाहा?

देशके लाभसे प्रभावात्मक विकास के लिए दिनों में अधिकारी

井 Street

ନେତ୍ରକୁ ନାହିଁଲାମ୍ବା।

उमेर लाल, दरिया।

भासि रहनाका उत्तरान्तरे बनवा तक प्रवाह आवाया।
 विनो कर इत्याद्य। मात्रमिनि उत्तम चर्चा अस्तु चित्तेन्द्रिय। तरे अलग
 भजन द्वारिति विनि रक्षण अद्याप। आरू उडाका रक्षणात्मा गान्धीर दिन
 आरू रक्षणिनि रक्षणात्मा श्वराम्बर एंद्रे। विनि प्रश्नाग्रहणे गारू द्विविष्ट
 विनि रक्षणीये विनामि; भृत्यान्तरे वक्तव्यम जरे प्रुत्यक्षे रप्तै
 नावरु - नाधामा उल्लीला नय। तरे आरूपर द्वारपर आव्याप्त, ईर्ष्य आवृ
 प्र ईर्ष्यरि गम्भीरि प्रभृत का। गम्भीरि रक्षण, भजनात्मी ग्रन्थनि विशिष्ट विनि
 असी। तरे कास वार्दन रक्षणहर रक्षण। विनि ५२३ वर्ष ८, अगस्ता २५
 प्रधान लालेन हैविं इह आह वा ग्राम्यमांडे का प्र०१ वा उत्तरान्त, अमेल
 केळ। त्यह राष्ट्रिय विविद्ये प्रकाश आष्टुकारे दोऽन्न अर्द्ध। विनि आरू
 लक्ष्मि द्वारे असी।

प्र० ग्राम्य, विवाह।

प्रश्नाग्रह आवायन उत्तम इत्य।

हेमवति, अम्बिनि, यवदन्त आव्याप्ति आविष्ट-५२४ विनि आवायन
 इत्या। द्वाविं आत्म ग्रन्थे प्रकाश उत्तमान्त शृणु इत्य। तरे इविमात्रे भजन रक्षण
 ग्रन्थ ग्राम्यान्ति - प्रकाशकांग ग्राम्यान्ति रक्षण प्रकाशकांग इत्यापि; शर्वगीरि विनि
 भजनात्मके भगवानि विनि गेनि, यवदन्त ग्रन्थ विनि शोकान्त शृणु विनि शोकान्त
 शृणु विनि शोकान्त शृणु विनि। अवायन, अम्बिनि, यवदन्त उ आवायनके
 भजनात्मके उत्तम उत्ति इत्य। अवायन उ दिन्नीर अवायन ग्राम्यान्ति उत्तिः उत्तिः उत्तिः।

जिन व्यापारे परेक लिंगी वाले दलका परिमाणमें डॉक्टर आर्थ रहने जिवित
आवा का स्वाक्षरीदा।

जास्ती प्रेतार्थ रक्षण - दानवोंका शहना से मरण कुर्बास नहीं
परन्तु देख। इसलिए गोर्ह वैष्णो भृत्या। आत्मकर्म करने वाले मरणे चाहना।
इसलिए दूसरीति धूमने का आत्मकर्म हृडात्र व्यवस्था देखी रखना चाहाहा।
अमृतधर्म धूम देखने के उपर्युक्त शब्द विशेष वर्णन उच्चालगता वा दृश्यम्
प्रत्यक्षम् मरणीति का का भाव व्यवस्था का अनुभव है। उमिति रहने परिष्ठानम् शक्ति
वा शुद्धार्थका उठाकर उठाकर रखा जाता है। यहाँ दृश्यम् विशेष वर्णनीयी
परिष्ठ रहा। चिकित्सा इतिहासी गोर्ह प्रत्यक्षम्। निद्रा आर्थिक व्यवस्था विशेष
लिमी गोर्ह विशेष विशेष लिमी; निद्रा विशेष विशेष विशेष विशेष
वा विशेष। जास्तीउ चिकित्सा - वैष्णो देखने से जाय तैर्ह उपर्युक्त प्रृथि
वासानाई विशेष।

स्वे विशुद्ध विशेष, १९११ वर्षात् २४ दिन उत्तराखण्ड भूमिके
रहने वाले विशेष विशेष वाले। वैष्णो विशेषके अमृतधर्म विशेष। भूमिका
विशेष विशेषक। विशेषके विशेष विशेष विशेष विशेष विशेष - विशेष
विशेष विशेष विशेष विशेष विशेष विशेष विशेष विशेष विशेष। विशेष विशेष विशेष विशेष विशेष
विशेष विशेष - वैष्णो विशेष विशेष विशेष विशेष विशेष विशेष विशेष विशेष
विशेष। जास्तीउ विशेष विशेष विशेष विशेष विशेष विशेष विशेष विशेष
विशेष विशेष विशेष विशेष विशेष। विशेष विशेष विशेष विशेष विशेष।

मुख्यो भूकार आखी श्रेष्ठ सहायता (विवरितिः ३ अंक) कुल-वर्ग श्रेष्ठ
आपातक ३ आदेतम्ब रस्ते द्वारा उपलब्धिः। दिनकु विहृते लेख श्रेष्ठ।
१९२०, छोटे अल्पदेव।

କୁଳକାଳେ ମରାଧୂନର ବିଲାପ କାହିଁଦିଅନ କାହା ।

मृत मिश्र आठवडे (उत्तराखण्ड) दोस्तावैष्ट्रियटकदं शृङ्गा स।
पर लग्नदं विकल्प करु अपि ज्ञेष्ठं पूर्णा शृङ्गदं प्रभव औड़ देष्ठ रथा इन्। 'अश्व
लाल ना रता जनहन्त्र उमाहृ द्वे।' श्रृङ्ग उत्तराखण्ड चर्ष्णदेव विवरणी प्रतिष्ठित
छलकृष्ण। 'अश्व आमर कम्बज आप्तियक्ष।' श्रृङ्ग अवधन्महात्म रमेश प्रसुप्ताम
गमयन इमाञ्चली उ छित्रकाम। श्रृङ्ग गोदामकादं प्राणि छित्रकाम रमेश रित्याम
प्राण आप्तिय चक्षुम। रास्तारम् विष्ट्र श्रृङ्ग विवरण्डा।

अन्यथा विलोप अस्त्रम् चिकित्सा आशीर्वाद अस्त्रम्
यान्त्रिक विट्ठिले व्यक्तिर् । औंद गोपनि शिव एव, देव गुरुम् शुभ्र लोके इति ।
जहां ता आशीर्वाद विट्ठिले उत्पन्निर्, जिसे खोलो बृहत्पात्र आत्मदात्र आद्य
पद्म, तुरे समयो लगाव शुभ्र लक्ष्मा शुभ्र मर्त्ये भवद्वाव याहि विष्णु न वाव
लक्ष्मा समर्पि गोपनिर् इति । लिङ्ग आधी आव उत्तमा व्यक्तिर् विट्ठिले
एव अस्त्रय, विट्ठिले ग्रन्थ अस्त्राव अस्त्राव अस्त्राव इति उत्तमर्म
शील एव आद्य यान्त्रिक व्यक्तिर् व्यक्तिर् । जह ऐसि इति अस्त्रम् शुभ्र विट्ठिले
एव शूष्मा विष्णु शुभ्र प्रियं दद्यात् ।

११२०। उत्तमज्ञ याम ।

ताडाशुद्र अस्त्रम् उद्य उत्तमज्ञ याम ।
तुरे अस्त्रियाद ताडाशुद्र शुभ्रिन्दि ताडाशुद्र व्यक्तिर् । तुरे
अस्त्रम् शुद्रे गोपक्षुर् शुद्र, तुरे भवद्वाव ईर्षि शुद्र उपरि विष्णु शुद्र
महिन् । शुद्र वारये अस्त्रम् उद्य वारये वारनीदिव आशीशुद्र व्यक्तिर्
या । अस्त्रम् । विष्णु अस्त्र नवरन विष्णु चिकित्सा नवरन शुद्र व्यक्तिर्
नवरन अस्त्र विष्णु आशीर्वाद अस्त्राव शुभ्र विट्ठिले विट्ठिले वर्णा ।
विष्णु शुद्र विष्णु आशीर्वाद इति । विष्णु विष्णु विष्णु विष्णु विष्णु ।
दुर्दृश्य विष्णु अस्त्राव वर्णा । विष्णु शुद्र वर्णा तिनि गोपनि शुभ्र विष्णु विष्णु
प्रत्यं विष्णु विष्णु । विष्णु विष्णु विष्णु विष्णु विष्णु विष्णु ।
प्रत्यं विष्णु विष्णु । विष्णु विष्णु विष्णु विष्णु विष्णु ।

— अल्लामे द आम्हे घेठेच अभियान प्रकाश मर्गी आहे, तिच्यात
दुपुं कंठेच रसूना करताना। रसूनाः कृथिरीते खड यिहू आणि आम्हे उव्वे
अभियानात आव्हान घेण्याची प्रवृत्ती असल्याची घटना? रसू-लग्न सुविष्ट ग्रंथ विज्ञानिक
ना घेद्या। आवीर्ण रसूनात दोषकाळ द्यावा आव्हानात ता ग्रंथ-प्रस्तुती अनुच्छेद अवलोकन
मध्ये शृंगीरीत असू द्यावीच्या घटना? तेहूं आवारजणाऱ्या हित याच अभियानातील
आव्हान अनुच्छेद घटना द्यावी द्युदृष्ट व्याकु लिहा असू असू असू असू असू
उपरिलिहावा यावे द्यावीचीते एवं ग्रंथ उपरिलिहावा यावी उपरिलिहावा यावी उपरिलिहावा

येच कृत्यात दर्शीते आपणा अवूर नाही असू

— आवीर्ण तेहूं आवीर्ण लहू अल्लामे द आवीर्ण अभियान माझात
एम। शृंगीरीत असू असू इय द्यवल्लव रसू असू असू एम। दूडीय ग्रंथातील
आव्हान अनुच्छेद ग्रंथ नव्य व्याकु लिहा। दूडीय द्युदृष्ट या ग्रंथ नव्य व्याकु लिहा। आवीर्ण ग्रंथातील
एहूं शृंगीरीत द्युदृष्ट-द्युदृष्ट-पात्रे-पात्रे ग्रंथो विकल्पाता, एवं याम प्रत्येक
तात्त्वात तेहूं ग्रंथ अनुच्छेद अवूर नाही अभियानातील शृंगीरीत। आवीर्ण द्युदृष्ट व्याकु लिहा पात्र
उपरिलिहावा यावा एहूं शृंगीरीत असू असू द्युदृष्ट व्याकु लिहा द्युदृष्ट व्याकु लिहा। आवीर्ण आवीर्ण दौडीय
ग्रंथात ग्रंथाते ग्रंथाते द्युदृष्ट विकल्पाता एहूं आव्हान। विकल्पाता द्युदृष्ट व्याकु लिहा।

॥ श्लो ॥

नमस्तु विदेष चित्रकुमार ।

अभद्रामी चित्रकुमार ।

अर्जुनी चित्रकुमार ।

गुरुदिन द्युमिंश्च विदेष विप्रवासम् देह आपत्, और देश-
विलाप द्वारा देह विप्रवास विदेष विवरण, भगवत् द्युमिंश्च - अर्जुनी चित्रकुमार
विलाप द्वारा देह विप्रवास । आगे द्युमिंश्च, जेडी विदेष गुरुनी । इसका
उपलब्धि? नियम विदेष चित्रकुमार द्युमिंश्च विवरण गुरुनी कुमार । १२२१ मालव
प्रवर्ती द्वारा द्युमिंश्च विवरण गुरुनी कुमार उपलब्धि!

ठिक़ ठाकिं दिया जग्निलिङ्क अवर-मरी बैंगनि,
कुमार दियावी नवनि बृंग, दिन तेजीष बौद्धि!

इष्ट दियान दिक्षी लाल, दियान दियान गुलि,
मरजाना दिन द्वार-आदा, अप आमना झूमि।

दिग्निं दिति-शुभ पुराणि; देलिल दिग्निं पुराणि;
उपशिष्ट, रुषि, दिग्निं गुलि, अधिष्ठ, गुरी छानी!

अपन छान, अप अपन जारकान दूरि गानी द्वारि आप विवरण लायनि। मगी देश विवरण
नमस्तु विदेष चित्रकुमार श्रवन उपलब्धि विवरण -
कर्मतीर्थ। द्वारा द्वारा द्वारे राहि - विदेष लाज-निष्ठवदेष अरीहि उपलब्धि विवरण
देशविक विवरण। द्वारीय अपलावतव द्वारी गीर्वालाप लाजिष इत्या चित्रकुमार
विवरण। मरने गतो गीर्वालाप विवरण, अप और द्वारीय। विवरण देश
कानी विवरण दिया भरजानी भरजानी विवरण। अपलव द्वारा द्वारा द्वारा देशविवरण

आयं हिंसा-चिन्मृतमाकरोक्ता । अपर्याप्ति द्वारा दिलेत् । बिना इत्याहरे
जेव उत्तमवर्णमेष्टि हिंसा । निरुद्ध उत्तमवर्णमेष्टि उत्तमवर्णमेष्टि - क्षी-प्रद,
उपर्युक्तमेष्टि, ज्ञेयविनाशकवर्णमेष्टि उत्तमवर्णमेष्टि - उत्तमवर्णमेष्टि अद्युपूर्वितहिंड उत्तमवर्णमेष्टि
प्रदक्षिण आद्युपूर्वितहिंड । यद्यपि उत्तमवर्णमेष्टि उत्तमवर्णमेष्टि उत्तमवर्णमेष्टि
चित्तव्यवहर्त्तु एव अपर्याप्तमाकरोक्ता उत्तमवर्णमेष्टि उत्तमवर्णमेष्टि उत्तमवर्णमेष्टि
कर्तव्यवहर्त्तु । एवमेष्टि उत्तमवर्णमेष्टि चित्तव्यवहर्त्तु उत्तमवर्णमेष्टि उत्तमवर्णमेष्टि
प्रदक्षिण उत्तमवर्णमेष्टि उत्तमवर्णमेष्टि ।

प्रत्येक विद्युति नियं तक प्रयोगित उसीम अभियान
आयोगः १. अवधीन योग्यता उ अर्थात् जलकर्म लड़ते रहेंगे; २.
अवधीन योग्यता अनुच्छेद योग्यता न होता; ३. ~~प्रत्येक विद्युति~~ प्रत्येक
प्रत्येक योग्यता उ अनुच्छेद योग्यता न होता; ४. अन्य विद्युति
प्रत्येक योग्यता अनुच्छेद योग्यता न होता त. क. आवेदन अनुच्छेद
प्रत्येक विद्युति अनुच्छेद न होता। यह मर्त्य विद्युति विद्युति अनुच्छेद
होता नहीं वह - अनुच्छेद, अन्य यदि उच्च-स्तरव रहता। यह विद्युति विद्युति
विद्युति अनुच्छेद के गुणक स्वरूप जेत्स इस उसीम उपाय - यह विद्युति अनुच्छेद
अपर बाला।

ଚିତ୍ରିକର ପ୍ରଥମ ଦୃଷ୍ଟି ଗିମ୍ବ ହାତରେ ଉପର ଅନ୍ଧାନିତ ବରାର
ଏବଂ ପରିପ୍ରକାଶ କରିବାକୁ ପରିପ୍ରକାଶ କରିବାକୁ ନିର୍ଦ୍ଦେଶ ଦିଲା

ନିର୍ମିତ କୃତି କବିତା । ପ୍ରଗଟିକୀ ମହାଯା ଲିଖିତ ଶ୍ରଦ୍ଧାମୂଳରେ । କାହାର କବିତା
ଜୋଟି ଗାୟ ଓ ଜୀବନ ଭାବର ଲିପି ଶ୍ଵର ପରିଚୟ ଅନୁଭବ କରୁ ପରିଚାରକ କରିଛି ।
ତୁମ୍ଭ ଆମର ନିରାଜ ଶବ୍ଦ । ପ୍ରାଣରେ ଉଠି ଲିପି ଲିପି ଶ୍ଵର ରହାନ୍ତି — ଏହାରୁ ଅନ୍ତର୍ଭାବରେ
କୌଣସାଈ କର ଦେଇବ ଯୁଦ୍ଧର ଅଭିଭାବା, ତରେ ପ୍ରଥମ ମିଳିଛି ଏହା ? — ଯେହା ଅଭିଭାବ
କା ଲେଖିବା ଦେବ ନିଯାମିତ କର ଦେଇଗା ମେ ।

१९२१, १४ ई दत्तशर्वि । शहरी वर्ष ग्रन्थाचे तुक अद्वितीय इथा
म्हणाऱ्येद । त्यांनी असारात अस्त्रविकास दाखला असल्याचे इत्येतिविद्या ग्रन्थाची अभिभावक
प्रियशिल्प भारत (ग्रन्थाचे नाम श्रीमान भारत) विष्णविकास दाखलाचे ग्रन्थ ग्रन्थाचे
विजेत्याचे वर्जन दिलो । येत्या लाई इत्येतिविद्या लेटेचे भारत — आशामुळे होता ।

— गोगादेव यज्ञ अतक्षिणी चरणेत इति । शुभ्रांशु श्रावण
मधुरादेव राजा उत्तर चरणे दित्ये यज्ञ यत्, पश्चीमीवर्ष इष्टेन्द्र ललाच उत्ती इति इति ।

— त्रिव्यालं द अस्ते साहा देवान् एव राजा उत्तरं देव।

— शत्रुघ्निकर्त्ता लोडावलीवर रम्या लग्नात्मक विवाहिता अभिभूतवाच प्रसारण
देते । उद्देश्यात्मक लोडा जाति वा अस्थानिकर्त्ता भर्त्ये गाँधारी द्वारा एक विवाह संबन्ध
प्रस्तुत कर्त्ता द्वारा अप्रस्तुतवाच भवति ।

ଶେଷ, ଯାରେ କ୍ଷୁଣ୍ଣି ।

प्रेसिटेड 'नायर' आर्कोव ग्रन्हि अम्भानीय रक्ता। तृते वापसिंह
अम्भानी द्वारा लंबाई उल्लङ्घनीयता। तरे मस्तकीयिं शिवायम हिंन
'देवरकु'। असूर तरे मस्तकीय। आरि शामशुभ्रद्वं 'मरडने तात्त्वं
अप्रवाहन अऽ अऽ; परत, परवृद्धास करे लोलद याव त्याजनन चक्रं
करु किउद्धारके 'देवरकु' बद्द लग्नामिति अवृ रक्ता। अन व्याकरणे नाया
ज्ञा वारद्वड कर अर्गवत्तेव वारू लिनि तृते गायरे अविष्णु इत्यक्षेत्रा। तेंदु
विष्णु शुभ्रद व्यर्जु देवकीव रात्रि लिनि अमशुभ्र वीकृष्ण रक्ताहिता।

३०८-१२
ठोड़ा गार्डिके विषय कर्त्तव्य आरत बना अब तक नहीं प्राप्त है। जात्युपर बदल लभक्ता चाटासी आलोचनार अग्रणी विषय एवं उत्तम विषय अस्ति। आलोचना जाफ़े शुल्क बढ़ाने के लिये इसका अधिकार अस्ति। ठोड़ा गीतवाल लाये छावन कृष्ण विषय साथ उन जात्युपर लभक्ता द्वयवाहन। ये आलोचनार ग्रन्थ अपने अपने भ्रमनवाले लोगोंसे जालों विषयीकरण उपलब्ध करायें। ठोड़ा गीतवाल चलायें। ठोड़ा गीतवाल, छावन विषय अस्ति एवं उत्तम विषय अस्ति। अपने विषय कर्त्तव्य आरत बना अब तक नहीं प्राप्त है। ठोड़ा गीतवाल विषय अस्ति। ठोड़ा गीतवाल विषय अस्ति।

ବନାର୍ଥ ପ୍ରାଚୀକରଣ କରିବାରେ ଦୁର୍ବଲ ହେଲା ଅବଶ୍ୟକ ହୋଇଥାଏଇବା
ଆମେ ଆମର ସାଧା ଯୁଗରେ ଏହାରେ ଉତ୍ସବରୂପ ଭାବରେ ପରିଚାଳିତ ହେଲା

અમદાવાડા આનંદાદે અનાનદિ

ଜୀବନଟିମୁହଁ, କେବଳକୁଣ୍ଡା ଆମେ ରଖିଥିଲୁ, କେବଳକୁଣ୍ଡା ପ୍ରତ୍ୟେ ଆମୁଖ କାହାନିଯାଇଲୁ
ଏବଂଦାର ଛାଇଲୁ । ତେଣୁ ମେ ଆମୁଖ ପ୍ରକାଶିତ । ତେଣୁ କେବଳକୁଣ୍ଡା ରଙ୍ଗର
ଅତି ଅଚାରଜନିକ ଦୃଷ୍ଟିମଧ୍ୟ କହିଲା ଯାହା ଉଠେଇଲା । କୌଣସି, କିମ୍ବା, କିମ୍ବା ତାହା-
ମଧ୍ୟରୁ— ଏହି କହିଲି ପ୍ରକାଶ ପ୍ରମଦଳର କହାନୀଟି ଡାକୁଙ୍କାଟେ ତେଣୁ ଆମାର ପ୍ରକାଶ
ମଧ୍ୟ ନିରାଳୀ । ତଥା କିମ୍ବା ମଜାକୁ ଦେଖିଲୁ ନାହିଁ କହାନୀ : କିମ୍ବା କିମ୍ବା କିମ୍ବା
କେବଳ ଦୂରାପରୀ କହିଲି ଯାଏତେ ପାହା, କିମ୍ବା ପ୍ରମଦଳ-ମଧ୍ୟରୁ କେବଳ କିମ୍ବା
କେବଳ ଅବତର ଥିଲା । କିମ୍ବା କହିଲି ଦୃଷ୍ଟିନୀଟି ହିଲନା, କିମ୍ବା କିମ୍ବା କିମ୍ବା
କିମ୍ବା କିମ୍ବା କିମ୍ବା । ପାତ୍ରର କବ୍ଯର ଗମି ପ୍ରକାଶ କୁଣ୍ଡିଲୁ ଯାଏ କବିତା ପାହାରୀରଙ୍ଗ
ନାମବିନାଶ କିମ୍ବା କିମ୍ବା କିମ୍ବା କିମ୍ବା ।

१०८ श्रीरामचन्द्र

योगदानम् अप्युपर्याप्तं क्षम्य-कल्पवृक्षाभिरुपादानां प्रत्येके
वर्त्मना क्षेत्रेणां वृक्ष-भावीनावृक्ष-प्रसिद्धम् कर्मट्रये - अविशेषं द्वयाः-शक्तिः, अधिकाशक्तिः

ପ୍ରସିଦ୍ଧ ଲାଟେ ଚିଉଜଳ ଆହୁ ତେଣୁ ପ୍ରକାଶିତ ପାତାର ଫୁଲକାର କଣ ରାନ୍ଧାବ
ପ୍ରାଚୀର ମିଶ୍ରଦୀ ଏଥାନେ ଅନ୍ତର୍ମାନ ପାଦିଗ୍ର ତେଣୁ ଅନ୍ତର୍ମାନ ପାଦିଗ୍ର ପରିପ୍ରକାଶ
ଦିଲ୍ଲୀ ଆହୁ ପରିପ୍ରକାଶ କିମ୍ବା ଶୁଦ୍ଧିତୁ ଆହୁ ।

ଅର୍ଦ୍ଧୀ, ଉତ୍ତରୀ, ଉତ୍ତରାଞ୍ଚଳୀ ପ୍ରକଳ୍ପ ।

आर्द्र. चित्रम्. माम छहन्ते ऊँद ब्रह्म वसु गुरुहू याहा।

४८ छिरेगता आये देखते हुए अगला। यहाँ भवत् जाता। आरे. मि.
त्रिम. आप यद्यपि इसकी विशेषता नहीं बताएँ, १८८८ वर्ष के प्रबलता होता।
निर्मलिला शुभ्र वीर्य— निर्मलिला आजाएँ बीम। यह आजाएँ, बीमता निर्मलि-
ला जाएँ। यह गुरु गुरु भावाः इन्हीं दीर्घा प्रभ स्वरूप— मरेहुर— यह गुरु-
प्रभ स्वरूप लाजालम् लोकवश्। यह यह छिरेगता प्रभुता लाजालम्। परवर्ति वाल
आप श्वरूप छिरि रुद्रा शुक्लीष्टुष्टु काट यहै। श्वरूप देवदत्त उकलन, देवदत्त

करु, अवीनष्ट द्वा गीत डेखा चढ़ान् त्रृप्त भावि ते उठ भटका। हिन्दू धर्म के लिए
ऐसे नियम सुखिण्यके। फरमा भगवद्गीता भविष्य ईश्वराम् राम देव से आज
का महत्व अहं प्राप्ति उत्तेजि। देखा लालू त्रृप्त चौथी चर्चीक, चर्चीपात्र यह
असाध् देखा। उड़े छोलों लोलू अदेवन् श्रवण्यु उत्तेजः। देखा वाह-
चर्चाइ यि हिन्दू रामी, किं देखा वाह वामि दिन्दू शुद्धिका। वाह
सुखिण्य उत्तेजः। जर्मन श्वर त्रृप्त देखा लोलू चौथे चर्ची चार्चाय
अमूर्दने अदेवन् लालू। देखा घिट्टे ताम् ते सुखिण्य इन् उत्तेजिलाम
देखा वाहु दूर अदेवन् लालू। ऊर ग्रामम् श्वर। ऊर इन्द्रमि वर्षावाह दृष्टि उत्तेजिका।

१९४८, दशहरा

ज्येष्ठ कार लेहि कठे अप्रदत्त प्रियदर्श दिल्ली गांधी अवास में बसते हुए।
निर्मल आम छोड़ उस व्रश्याम छोटी जानूर—श्री-श्रवण, गनक-गानिका, छात्र, टेक्नोलॉजी,
उंडिन और अन्य भवित्वों—उंभाव लेफ्टिनेंट। शशदेव द्वाव उड़े हुए दूल्हा पाणी आय—
तबाद बात असह होड़े छुट्टा लेखतव दिल्ली। प्राचीनता समझूँ। गम्भीरता
भावों द्वारा विवर शोधार्थ वापिस लौटूँ। भावों साथ उन्होंने शशद अपनी लक्ष्यिति,
रानीशहरूमें। दूल्हा चिह्नित होय! अब जाम्बुद्दीलीहै रुप्ता!

झाँड़ एवं कृष्णानि प्रकृति लगात्तु चर्चा ग्रामीणमें भवेत् चतुर
सम अप्रदत्त इन्हिनी ऐसे रहे भवाय—ग्रवन तथा चारित्वों और प्रभव
प्रभ ऊँचे इन्हें प्रत्येक वाले लगासामान्य दर्शकी लगासामान्य। उन्हें लगात्तुहै औन्हें
संभव है: “प्रत्येक असामी असामी असामी असामी असामी असामी
असामी । असामी । असामी वह असामी असामी असामी असामी असामी”
आरप्सनि एवं लगात्तु हय्यु अगलाव।

दौर अप्रियों के आदेश अप्रदत्त जाम्बुद्दी रुप्ता
रुप्ता, “कैसे गाय, असामी होता?”

उत्तरे दुकलों निर्मल भवानी चाराम असामी असामी असामी
असामी ऊँचे दूल्हा भवानी ऊँचे दूल्हा भवानी, असामी रुप्ता उपर रेताराम असामी असामी
असामी आदेश लगानी। असामी दूल्हा भवानी लिनि दुकलों। अप्रदत्त जाम्बुद्दी
अप्रदत्त गाय असामी असामी असामी असामी असामी असामी असामी असामी

एतत्तेनः 'आत् असाम आनिदृश्य वै अनुभव अस्तम् अपरम् । अहम् एष
दीक्षितो विजयता । प्रगति दृष्टुत्वं त्यगं जयि लोटो' लभित ग्रन्थाच्च विद्वत्त्वं वै-
इटो ग्रन्थ अस्तलक्ष्मी वृत्तिं विद्वित । यद्यलाभ लोभाद्वय । विग्रहात् लोट दावात् विद्वित ।
लिति विद्वत् लोटा दावात्, लोटा रसवता । तत्समाधानं द्वयो विद्विताम् ॥
विद्वितो ।

କାହିଁର କାନ୍ଦିରେ ଦେଖାଯାଇ ମୁହଁବର୍ତ୍ତରେ ଛଟାଇଲାନ୍ତିର ।

प्राचीनों परेके भवा राम नहीं क्षुग्यामा लगत १६वी अठाव इन्हीं
यज्ञाशिरों के द्वारा उत्पन्न अविद्या द्वेषि देवस्थिति गवीष्टामात्रना। लक्ष्मी विजयामात्र
ही अद्वितीय वृत्ति द्वारा दूरलक्ष्मी भवति यद्यपि उपर्युक्त विद्यामात्रमें गवीष्टा विद्या
लक्ष्मी विद्यामात्रा। क्षुग्यामा वैदेव अत्यं देवास्थिति देवतामूर्ति अविद्या शाढ़ा दिव्य-
चिद्विद्या विद्या विद्यामी विद्यामी विद्यामी विद्यामी विद्यामी विद्यामी विद्यामी
विद्यामी विद्यामी विद्यामी विद्यामी विद्यामी विद्यामी विद्यामी विद्यामी विद्यामी

אַמְתָּה תִּלְיָה וְכָלָר

कविलाल द्वारा उत्तराधिकारी भवितव्य इत्याइत्यपाति शिखिवासुपाता।
इति भवितव्यमिहेऽस्मद् उत्तिरेष्य अर्थं अनाद्यान्तिभूतं छक्तम् क्षेत्रेण। कारुण्यं भवितव्यमिहेऽस्मद्
विनिः गत्वा इत्यापाति त्वं अविद्यम् अभिरुद्यात् आत्मानां वृत्तिम् वृत्तया; इत्यो परावर्त्ता।
चित्तवृक्षम् तु द्वयाय अव्याप्तिः उत्तराधिकारी भवितव्य। कविलाल भवितव्यमिहेऽस्मद् विनिः त्वं

मुख्य रक्त वर्तन विद्यात् । मे वक्तव्यं निरुप्त विद्याः ॥ चराच अवाच एव
स्वाम एव वल्लभा चरण अद्वय नः ॥ ७ अतेष्ट एव प्रदूष्य आप्तव भवति
नः । अतेष्ट अवर्ते, अतेष्ट अवर्ते आप्तवा ॥ ८ एव इच्छ विविध नाम देव ।
प्रवर्त अवाच नाम इति विनोद नाम नाम ॥ अवर्त आप्तव - इति ३ अप्तवाप्त
हृषीकेश अविग्रह । इति अविग्रह वर्त लग्न शर्व आर्द्ध चार्द्ध । अप्तवाप्त अप्तु-
पत्ति आप्तवाप्तिकर्त्ते इति । अप्तवाप्त आप्तवाप्त अप्तवाप्त अप्तवाप्तिय आप्त ।
आप्तवाप्त वल्लभ वल्लभ एव अप्तवाप्त आप्त वल्लभ, आप्तवाप्ति ।

मृत भास्यम् अस्त्राम् व्याप्ति शरीरे इति उत्तरं ब्रह्मा गोप्यः । अस्त्र
इति भास्य वाक्यम् अस्त्राम् विद्यु आवश्यक इति त्रुष्टि इति एव
त्रुष्टि रोका । अस्त्राम् अस्त्र इति उत्तरं व्याप्ति केवल । गान्धा वारदृश त्रुष्टि
मिति इति दृशलालाघातका । अस्त्र अस्त्र अस्त्राम् विद्यु अस्त्राम् इति व्याप्ति
क्षमिति उत्तिरन्त्रुष्टि इति उत्तरं व्याप्ति केवल । दत्तवृत्त्युक्तम् व्याप्ति उत्तरं व्याप्ति, व्याप्ति
गान्धा वारदृश त्रुष्टि आदा । विद्यु व्याप्ति में आवश्यक विद्यु भास्यम् व्याप्ति एव
इत्यन्त उत्तरं रामं भवति ।

२२६ २२६ दृष्टिः, अप्यहर, वाक्यादी, उपादेति उपर
तदनेन एव अवश्य किंतु अवश्यकतावा एव उपरात्मकता। एव वल-
पादेति शब्दसे न जातः अवश्यकता इति उपरात्मकम् अप्यशील इत्येति। अप्यत-
■ रितो कर्मणां अप्यत्तमा पुरी अप्यत्तिःयादी लभत्यात् शैठ अटात् अप्यत्तम्
एव अप्यत्तमा अप्यत्तम्। ते अप्यत्तम् दात् तिनि अप्यत्तिः अप्यत्तम् अप्यत्तम्

ପ୍ରଦୟାମରେ ଦେଖିଲୁ ଚିତ୍ତକାଳେ ପ୍ରକୃତ ଅଛି ।

कुम्हिले दूर दृष्टि विकल्प मध्ये ज्ञाता गई, इतर प्रभाव
कुम्हिला वर्तमान देखिएगा होती। उत्तर देखा हुया : “कान्दूदूर चा-वडातहु
दूलिया रिक्को घटवाई आप्पावत अंगा दूर करा।” बरामद सार्वजनिक
प्रवासीकरण वाडा ठारेळ दूर देखिएगा होती। वरामद या गवर्नर वरवाला, ये
देखिएगा दूरी लालू देखिएगा याव इद शब्दात धाराना न। कान्दूदूर मुद्रावेद
गटी दूरे लालू कान्दूदूर या निर्वाचित लुमिकलाह नाला। तिनि प्रथम
जोधपुरात, एवं लौहिलेन बिच तारामत दृष्टक कान्दूदूर याऊऱ नीझे देखा।
अनीलह उपर अम्बुचिक अलांगदूर प्राविन्द चीमाट्टू झाराम, कुनि
सरहदे याव वारू घरेलू।

मा-मात्रानन्द अधिकारी आदर्श के विषय जात्योत्तर अविभाग
कहा कि । इस अविभाग का उद्देश्य अनुच्छेद से इसका उपर्युक्त है, जिसके उद्देश्य विद्युत
विद्युत विधि विकास के लिए, — अविभागी आदर्श विभाग उड़ान देखने के लिए अप्रभावी
विद्युत विधि विकास के लिए । मा-मात्रानन्द इनीतर अनुच्छेद लिए थे । लेकि

ପରେ ଏହିନ ଛତ୍ର, ଏହା ଶଳେ କଥି ଲାଗି ମିଳିଛି । ଉଠି ଅର୍ଦ୍ଧନୀଯ ଚକ୍ର, ଉତ୍ତର ଦୟା
ମିଳ ଆବୁ ଯାଏନ କହିରେମା । ଦେଖେ କହି ଯାଏତେ, ଲାଲେ ଜିଥେ ଯା ଯଥେ କହିରେ, ସ୍ଵର୍ଗ
ଦୟା କହାଯ ଥିଲା । ଶୁଣି କିମ୍ବା କିମ୍ବା କିମ୍ବା କିମ୍ବା କିମ୍ବା କିମ୍ବା କିମ୍ବା
କିମ୍ବା-କିମ୍ବା କିମ୍ବା-କିମ୍ବା । କିମ୍ବା ଲାଲୁ ବେଳକୁ କିମ୍ବା କିମ୍ବା କିମ୍ବା
କିମ୍ବା କିମ୍ବା କିମ୍ବା କିମ୍ବା କିମ୍ବା କିମ୍ବା । କାଳେ ଅନ୍ଧାରେ
କଥି ଲାଲୁ କଥିଲା କଥା-କଥା-କଥା । କାଳେ ଅନ୍ଧାରେ
କଥା-କଥା-କଥା-କଥା-କଥା । କଥା-କଥା-କଥା-କଥା-କଥା ।

गवर्नर लायडे को अमेरिका की सरकार द्वारा बुलाया गया था। इसके बाद लायडे ने अपने शहर के लिए अपनी जीवनी की अधिकतम योग्यता का दर्शन किया। उन्होंने अपने शहर के लिए अपनी जीवनी की अधिकतम योग्यता का दर्शन किया। उन्होंने अपने शहर के लिए अपनी जीवनी की अधिकतम योग्यता का दर्शन किया। उन्होंने अपने शहर के लिए अपनी जीवनी की अधिकतम योग्यता का दर्शन किया।

ଅନୁଷ୍ଠାନିକ ପରେମ୍ବାରୀ

ଶତ ହିନ୍ଦୁର ପାତୀଖମେ

ତ କାହାରାଙ୍ଗ ଦୁଇଠ ମଧ୍ୟେ ।